वर्ष 28 | भादवा-अश्विन | अक्टूबर-2023 | अंक 10 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

भ्रान्ति के कारण सुखरुप लगनेवाले इन संसारी प्रसंगों और प्रकारों में जब तक जीव को प्रेम रहा करता है; तब तक जीव को निज स्वरुप का ज्ञान होना असंभव है और सत्संग का महात्म्य भी यथातथ्य रुप से भास्यमान होना असंभव है। जब तक यह संसारगत प्रेम असंसारगत प्रेमों में पलट न जाय तब तक अप्रमत्तता से बार बार पुरुषार्थ करना अवश्य ही स्वीकार्य है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

नाणस्सावरणिज्जं, दंसणावरणं तहा।
वेयणिज्जं तहा मोहं, आउकम्मं तेहव य ॥
नामकम्मं च गायं च, अंतरायं तहेव य।
एवमेयाइं कम्माइं, अट्ठेव उ समासओ ॥

1- ज्ञानावरणीय, 2- दर्शनावरणीय, 3- वेदनीय, 4- मोहनीय, 5- आयु, 6-नाम, 7- गोत्र और 8- अंतराय। ये संक्षेप में आठ कर्म हैं। **- उत्तरा. सूत्र, 33.2,3**

पाथेय ***हे परम प्रिय स्वामि, सब जनों की विभ्रान्त बुद्धियों एवं चिन्तित हृदय में प्रवेश करो और अपनी दिव्य उपस्थिति की अग्नि जला वहां प्रज्जवलित करो पृथ्वी को ढक लिया है, उसी की अपनी अन्ध छाया से, और वह विचलित एवं डॉवाडोल हो रही है। इस अन्ध छाया ने छुपा लिया है तुम्हारे शाश्वत सूर्य को और अब वह डस रही है, प्रतिक्षण इस दीन विश्व को, उखाड़ रही है उसकी नींव को, उसके समूचे अस्तित्व को, और इसे एक भयंकर बिखराव एवं विभ्रम में कर रही है परिवर्तित क्या तुम इसकी इस दुर्दशा एवं दुर्व्यवस्था पर नहीं डालोगे अपनी दृष्टि ? प्रभु प्रकाश के पुन उद्भव का आदेश दो, जिससे अन्धकार की छायाएँ विलुप्त हो, दुश्चिन्ताएँ दूर हो।***

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-28 भादवा-अश्विन अक्टूबर 2023 अंक-10

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- हमारी अनमोल धरोहर : आगम ग्रंथ - (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन	5
4- रावण ने साधना से विद्यासिद्ध की, अहं से अवहेलना- शांतिलाल सगरावत	6
5- गुलामी से आत्म गौरव की और.... पू.जे.पी. गुरुदेव , महान जीवात्मा के पूर्व भव चत्तारी-अटठ-दस-दोय	7-8
6- वृद्धावस्था में साधना : विशिष्ट आध्यात्मिक अनुभूतियों को पानेवाले आत्मसाधक खीमजीभाई वालजी वोरा	9-11
7- तीर्थंकर परमात्मा के 34 अतिशय	12
8- जिसने हमें सोचना सिखाया- रुपनारायण काबरा	13-14
9- पर नारी से दूर रहो.... रविलाल वोरा, उंगली	15
10-''माँ'' से बढ़कर न दुजा- एस.सी.कटारिया	16
11-धर्म की पहचान ? कुसुम जैन	17
12-परमात्मा श्री वासुपूज्य स्वामीजी	18
13-संयम जीवन का मार्ग, उपधान तपाराधना- आचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.	19-21
14-जैन धर्म और महात्मा गांधी- डॉ. श्रीमती अल्पना जैन	22
15-तीर्थंकर और केवली में क्या अंतर है ? साध्वीश्री मुक्तिरेखाश्रीजी म.सा.	23
16-वर्गपहेली- 341 - जयंतीलाल जैन,रतलाम	24
17-ज्ञान गंगोत्री- 341-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा.	25
18-शासन-समाचार	26-41
19-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है	42

संपादकीय

हमारी अनमोल धरोहर : आगम ग्रंथ

भारतीय जन जीवन को सच्चे अर्थों में अनुप्रमाणित करने वाले दो आलोक पुंज है– एक प्रभाकर दूसरे सुधाकर। प्रभाकर दिन को गतिशील बना देता है तो सुधाकर रात शांत,निरव सुहावनी बना देते है। दोनों एक दूसरे के प्रेरक और पूरक है, इन्हीं दो आलोक पुंजों की आभा से प्रतिभासित कृतियाँ हमारे आगम ग्रंथ है, जो हमें ज्ञान का प्रकाश और सत्य का आलोक प्रदान करते है। आगम ग्रंथों में प्रतिपादित विषय हमें धर्म सम्मत बनाने और जीवन जीने का मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। कर्म और धर्म के बीच समन्वय स्थापित करने के साथ आगम ग्रंथ सत्य और धर्म,भक्ति और मुक्ति भोग और त्याग, अनुराग और विराग का दर्शन कराने के साथ देशकाल और व्यक्ति के बारे में वह ज्ञान देते हैं जो वास्तविक है। आगम ग्रंथ जैन जगत के अक्षयकोश है। जैनों की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक भावना को मूलाधार प्रदान करने वाली अमर कृतियां ये हमारे आगम शास्त्र ही है।

आगम की मूलशक्ति ज्ञान है जिसके कई पहलु है। क्षेत्र है। यह ज्ञान कभी शब्द के रूप में प्रकट होता है कभी विचार के रूप में, कभी संचरण के रूप में हमारे साथ चलता है तो कभी आचरण के रूप में हमें चलना सिखाता है। कभी मौन धारण कर यह आगम ज्ञान हमारे मन को मुखरित करता है कभी मनन बनकर मन में चिंतन की भावना जागृत करता है। यह आगम ज्ञान कभी कर्म की भावना जगाता है तो कभी धर्म का रहस्य खोलता है और कभी मुक्ति का मार्ग दिखलाता है। संक्षेप में कहे तो आगम जिस अर्थ में ज्ञान का पीठ माना जाता है उस अर्थ में यह ज्ञान जगत का सर्वस्व है, सृष्टि का बीजाक्षर है। जैन जगत के साहित्य की यह सारस्वत अभिव्यजंना केवल हमारे पूर्व गणधरों के अक्षर बीज मात्र न होकर समस्त विषयों की जानकारी के अभीष्ट की प्राप्ति का आधार है।

आगम ग्रंथों में जीवन दर्शन से लेकर आत्मदर्शन की सुगंध और माधुर्य का सम्मिश्रण है। सत्य और सृष्टि के सत्वसार इन शास्त्रों में समहित है। सत्य धर्म और सात्विकता के उपदेशों के साथ आगम हमें जीवन के उन समस्त विषयों से अवगत कराते है जो जीवन को सुन्दर बनाते है। अंधकार का आवरण हटाकर आत्मबोध कराने वाले आगम ग्रंथों की रचना जीने और जीने देने की सहज सात्विक भावना को हृदय में पैदा करती है। महान से महान व्यक्तियों के लिये भी,उनके मंगलमय मार्ग में अवरोध उपस्थित करनेवाले राग और मोह से सचेत कराने वाले आगम ग्रंथ मानव जीवन का लक्ष्य सार्वत्रिक सुख को दिलाने का मार्ग प्रशस्त करते है। मानव जाति का मंगल सूत्र 'शुभ के संसाधन में है इस परम सत्य की और आगम मानव मात्र का ध्यान आकृषित करने वाली रचना ही नहीं बल्कि उसके उपदेश को ग्रहण कर मानव जीवन सफल करनेवाला गुरूमंत्र भी है।

आगम ग्रंथ हमेशा ही जैन जगत के जन मानस के श्रद्धा और विश्वास का आधार रहे है लेकिन आज ग्रंथ का अध्ययन करने वालों की संख्या कितनी बची है? आज आगम ग्रंथों के विषयों के वर्गीकरण के साथ उन पर शोध की भी व्यापक आवश्यकता है साथ ही आगम ग्रंथों के अनुवाद की ओर भी ध्यान दिया जाना जरूरी दिखाई दे रहा है। सिर्फ पवित्र ग्रंथ कहकर हम उन्हें अलमारी की शोभा बनाकर नहीं रख सकते हैं। यह प्रश्न भी विचारणीय है कि इस क्षेत्र में समर्पण भाव से कार्य करनेवाले कितने लोग है? निश्चित रूप से परिस्थिति चिंताजनक है, कुछ किये जाने की दरकार है। आज धर्म के क्षेत्रों में जो पैसा खर्च किया जा रहा है उसका कुछ अंश आगम ग्रंथों पर खर्च किया जाना आवश्यक दिखाई दे रहा है। गुरू भगवंतों, श्रेष्ठीवर्यों और जैन विद्वानों से अपील करता हूं कि– सिर्फ आगम ग्रंथों और उन पर समीक्षा टिप्पणी पर आधारित पुस्तकों के लिये अलग से एक वृहत्त शोध ज्ञान भंडार की स्थापना की जाना चाहिये जिससे हम गर्व से कह सके कि ये आगम ग्रंथ हमारे गौरव और अभिमान को बढ़ाने वाले है इससे धरोहर की रक्षा और उसके विकास,शोध को मौका मिलेगा।

यह कितने आश्चर्य की बात है कि– आज इस देश में आगम शास्त्रों पर जो काम होना था वह नहीं हो पाया है, जबकि विदेशों में आज भी काम हो रहा है वह हमारे लिये गर्व और गौरव का विषय न होकर शर्मनाक बात है। इसलिये कि अब हमारी धरोहर में छिपे रहस्यों को जानने और उससे लाभ लेने का कार्य विदेशी कर रहे हैं। मैंने यह विवेचना इसलिये की है कि अब कुछ करने के लिये हमें आगे आना होगा। हमें जैन आगम ग्रंथों की साज संभाल रूपी साधना को अभीष्ट दिशा में प्रवर्तित करने में, अमूल्य योगदान देने के लिये आगे आना होगा। आईये आगम ग्रन्थ के लिये कुछ करें।

- डॉ. सुभाष जैन

रावण ने साधना से विद्यासिद्ध की, अहं से अवहेलना

✽ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

रावण ने मंत्रियों आदि की हित शिक्षा को अहितकारी शिक्षा मानकर बहुरुपी विद्या को साधने का हृदय में निर्णय कर शान्त कषायवाला होकर श्रीशान्तिनाथजी के चैत्य में जाकर भक्ति से स्नात्र कर गोशीर्ष चंदन से विलेपन और देवताई पुष्पों से पूजा और स्तुति की। रत्नशीला पर बैठकर जाप आरम्भ किया। मन्दोदरी के यमदण्ड द्वारपाल से नरक के लोगों को श्री जिनधर्म में आठ दिनों तक रत रहने की बात न मानने पर वधात्मक दण्ड देने की लंका में करवाई गई घोषणा गुप्तचरों से जानकर सुग्रीव ने उसे साध लेने की रामचन्द्र से विज्ञप्ति की। इस पर रामचन्द्र ने हंसकर कहा कि- शांत और ध्यान में रहे उसे मैं कैसे ग्रहण करूँ ? मैं कपटी नहीं हूं लेकिन अंगद द्वारा श्रीशांतिनाथ चैत्य में जाकर विविध उपसर्ग करने के बाद भी रावण जरा भी ध्यान से नहीं डिगा। अंगद ने मंदोदरि के बालों को खींचते रावण से कहा- तेने तो मेरे स्वामी के परोक्ष महासती सीता का अपहरण किया था, मैं तेरे सामने बाल खींचकर मंदोदरी का अपहरण कर रहा हूं, पर रावण ने उस ओर देखा भी नहीं। विद्या आकाश से प्रकट होकर, रावण से सिद्ध होकर विश्व को वश में करने की बात कहीं तो रावण ने कहा- सब तेरे ही सिद्ध होगा, स्मरण करने पर आ जाना।

रावण ने देवरमण उद्यान में जाकर सीता से कहा- तुमसे बहुत समय तक प्रार्थना की लेकिन अब मैं तेरे पति और देवर को नियम भंग करने के भीरुत्व को छोड़कर बलजबरी से दूंगा। रावण के ऐसे वचन सुनकर सीता मूर्च्छित हो गई। होश में आने पर कहने लगी- रामचन्द्र और लक्ष्मण की मृत्यु हो जाय तो मुझे अनशन हो। सीता के इस अभिग्रह करने पर रावण सोचने लगा- इस पर मेरा राग जल रहित पृथ्वी पर कलारोपण के समान है। मैंने योग्य नहीं किया जो विभिषण की अवज्ञा की, अमात्यों को नहीं माना और कुल को कलंकित किया। यदि मैं इसको छोड़ दूं तो रामचन्द्र के पराक्रम से भयभीत होने का अवयश मुझ पर लगेगा। इन दोनों को लाकर अर्पण करुंगा, यह धर्म से पाने लायक यश है। यह निश्चिय कर अपशकुनों को रोकने के लिये युद्ध के लिये रवाना हो गया। लक्ष्मण ने दूसरे राक्षसों को छोड़कर रावण के बाणों से आच्छादित कर दिया। लक्ष्मण का पराक्रम देखकर विद्या बहुरुपीणी का स्मरण किया जिससे उसके आते ही रावण ने अनेकों डरावने रुप बनाये, जिधर देखो वहीं रावण। अस्त्र बरसाने रावण पर लक्ष्मण ने रथ पर सवार होकर तीक्ष्ण बाणों से प्रहार करना शुरु कर दिया। उसके तीक्ष्ण बाणों से घबराये रावण ने अंतिम शस्त्राचक्र का स्मरण किया और हाथ आने पर घूमाकर लक्ष्मण पर छोड़ दिया। वह प्रदक्षिणा देकर लक्ष्मण के दाहिने हाथ में स्थित हुआ।

रावण दुःखित होकर सोचने लगा- मुनि का वचन सत्य हुआ। विभीषण ने रावण को दुःखी देखकर फिर कहा- भाई ! जीना चाहते हो तो सीता को छोड़दो। ऐसे में भी रावण भवितंत्यता वश क्रोधित हो बोला रे ! चक्र मेरा ही अस्त्र है। चक्र मेरा क्या बिगाड़ेगा ? अभी चक्र सहित शत्रु को मुष्ठि से मार दूंगा। रावण ने वचन सुन लक्ष्मण ने रावण पर चक्र छोड़कर उसकी छाती को उसी के छत्र से विदार दिया। इस तरह आश्विन सुदि 10 को पिछले पहर में मरा रावण चौथी नरक में गया।

रावण ने साधना से विद्या सिद्ध की। सीता को अपनी प्रतिज्ञा भंग करने की बात कह दी, सीता के अभिग्रह से उसकी बुद्धि मार्ग पर आई, परन्तु उसी समय अहं ने उसे घेर लिया। जहां सोचने का वक्त आया पर वह उल्टा पड़ गया। युद्ध के लिये आते वक्त भी विभीषण की अंतिम शिक्षा की भी उसने अवहेलना की। अपने ही चक्र से उसकी मृत्यु हुई। केवली भगवंत का वचन सिद्ध हुआ। जय-जयकार करते देवों ने पुष्प वृष्टि की। हर्ष से वानर नाचने लगे।

रामचन्द्र लक्ष्मण ने विभीषण, कुंभकर्ण को समझाते हुए कहा- रावण जैसे पराक्रमी, कीर्ति प्राप्त वीर वृत्ति से युक्त पुरुष पर शोक नहीं करना चाहिये। रामचन्द्र आदि ने पद्म सरोवर में स्नान कर जलांजलि दी।

जिसे (लगन) लगी है, उसी को लगी है, और उसी ने उसको जाना है; वही ''पी.पी.'' पुकारता है। उसके ही चरणसंग से लगती है और जब लगती है, तभी छुटकारा होता है। इसके सिवाय और कोई सुगम मोक्ष मार्ग है ही नहीं।

गुलामी से आत्म गौरव की ओर....

✻ पू. जे.पी. गुरुदेव

✻ वर्तमानकालीन समय में चिंता, डर, तनाव, Depression यह सब तो आजकल के जमाने में मनुष्य के जीवन का एक Part बन गया है।

✻ मनुष्य के जीवन के लिए एक बहुत ही बड़ा खतरा बन गया है, इसी के चलते न जाने किसकी जिंदगी का कब अंत आ जाय तो पता ही नहीं चल रहा है, किसकी जिंदगी में कब क्या हो जाय यह समझ में ही नहीं आ रहा है।

✻ जहां तक मेरा मानना है तनाव आने के, चिंता बढ़ने के, डर पैदा होने के कुछ मुख्य कारण- 1- Over thinking.... 2- Over commitment.... 3- Over trust.... 4- Over work load.... 5- Over responsibility.... 6- Over confidence.... 7- Over relationship.

अगर हम शांति से सोचेंगे तो हमें इस सदी की सबसे भयानक बीमारी का/ तकलीफ का इलाज यहीं से/इसी से मिल जायेगा।

✻ हमें अपनी जिंदगी जीने का तरीका बदलना होगा, हमें अपनी खाने-पीने की आदतें बदलनी होगी, हमें अपनी मिलने-बोलने की आदतें बदलनी होगी, हमें अपनी सोने-उठने की आदतें बदलने होगी, हमें अपनी आने-जाने की आदतें बदलनी होगी, चाहे कुछ भी हो जाय परन्तु मन से सदैव Fresh रहने की आदत डालनी होगी, जरुरत से ज्यादा कभी कोई जिम्मेदारी अपने सिर पर मत लिया करो, कुछ बातें समय पर छोड़ो, कुछ बातें नसीब पर छोड़ो, कुछ बातें किसी और पर छोड़ दो।

✻ यदि आपको Anxiety से Depression से, चिंता से और तनाव से बचना है तो जिंदगी में गलत काम कभी करो ही मत, गलत राह पर कभी जाओ ही मत, गलत संग कभी करो ही मत, गलत लोगों से कभी मिलो ही मत, गलत तरीके से पैसे कमारो ही मत, गलत रास्ता कभी अपनाओ ही मत.... अपनी जिंदगी के लिये सटीक Rule तय करें, Principal बनाइए, Self Discipline में बने रहे, अपनी जिंदगी की डोर किसी और के हाथ में गलती से भी ना दे, खुद का निर्णय खुद लेने की क्षमता बनाए रखें, अपना Confidence कभी Loose मत होने देना।

✻ सिर्फ बड़ी बड़ी बातों में और सिर्फ आसमानी ख्वाबों में ही दिन ना बिताए किन्तु छोटी छोटी बातों को लागू करके कुछ न कुछ सफलता हासिल करते रहो, बड़े स्वप्नों को इस तरह साकार करें परन्तु मूल्यवान समय को व्यर्थ ना गंवाए।

✻ किसी के झूठे आश्वासन में कभी मत फंसना, किसी की झूठी आश में कभी मत रहना, जो संभव है और सत्य है उसको स्वीकार करके आगे बढ़ते रहोगे तो आप इस सदी की सबसे बड़ी बीमारी का भोग कभी नहीं बनेंगे।

✻ अति लोभ से बचते रहो, ज्यादा काम करने की कोशिश मत करो, समय पर अपने मन को आराम प्रदान करें, फिर देखो क्या चमत्कार होता है।

✻ किसी को भी दवाई को अपनी जिन्दगी का आधार नहीं बनना चाहिये क्योंकि दवाई से जो Side Effects होते है वे हमें भीतर से कमजोर कर देती है/खत्म कर देती है, शरीर के Organs को नुकसान पहुंचाती है, स्फूर्ति एवं यादशक्ति को मंद कर देती है, बेचैनी बढ़ा देती है, जिन्दगी में हंसी और खुशी गायब कर देती है, मन की शांति और स्थिरता खतरे में आ जाती है।

✻ अगर हम डॉक्टर की मेडिसिन के साथ-साथ जानकार गुरु से मेडिटेशन सीखकर प्रतिदिन कुछ समय ध्यान करेंगे तो भी हमारा टेंशन और डिप्रेशन का इलाज आसानी से हो जायेगा।

✻ **एक विशेष उपायः-** जब भी कोई इन्सान डर से, भय से, चिंता से, डिप्रेशन से बाहर आना चाहता है तो उसे ध्यान के माध्यम से खुद को सुरक्षित करना चाहिये।

✻ ध्यान को कुछ मैं अलग अंदाज में आपके साथ Share करना चाहता हूंः-

1- आपको हर प्रवृत्ति पर आपका ध्यान केन्द्रित करो, कहीं कोई प्रवृत्ति आपको नुकसान तो नहीं पहुंचा रही है न ?

2- आपको हर शब्द पर आपका ध्यान केन्द्रित करो, कहीं कोई शब्द आपके जीवन व्यवहार में आग तो नहीं लगा रहे है न ?

3-आपके हर कार्य पर आपका ध्यान केन्द्रित करो, कहीं, कोई कार्य आपकी जिंदगी की Image को Damage तो नहीं कर रहा है न ?

4- आपके हर संबंध पर आपका ध्यान केन्द्रित करो, कहीं कोई संबंध आपके जीवन को दिशाहीन तो नहीं कर रहे है न ?

5- आपके हर भाव पर आपका ध्यान केन्द्रित करो, कहीं कोई भाव आपके मन को दूषित और विचार को कलुषित तो नहीं कर रहे है न ?

❋ ध्यान का मतलब सिर्फ आंखे बंद करना ही नहीं होता है, खुली आंखों के साथ जीवन व्यवहार को प्रमाणिक बनाना ही स्वस्थ जीवन और स्वच्छ मन की पहचान है।

❋ जिनको भी Tension मुक्त जीवन जीना है उनको सदैव Attention में जीने की/रहने की आदत डालनी चाहिये।

❋ हर मानव को खुद की Life का Audit समय समय पर खुद को करना चाहिये, बुराई को Delete को कमजोरी को Remove करें, मजबूरी को Hidden करें ताकि किसी भी बात को लेकर दिमाग पर भार नहीं आवे और मन में डर पैदा होवे ही नहीं।

चत्तारी- अट्ठ - दस - दोय

1- (4+8)+(10+2)=24
अष्टापद के ऊपर विराजमान 24 तीर्थंकर परमात्मा की प्रतिमा को वंदन !

2- (4X8)+(10X2)=52
नंदीश्वर द्वीप तीर्थ पर के चैत्यों को वंदन !

3- (8)+(10+2)=20
सम्मेदशिखर तीर्थ के ऊपर त्याग करनेवाले 20 तीर्थंकर अथवा 20 विहारमान को वंदन !

4- (8) X(10X2)=160
चत्तारी-त्याग कर पांच महाविदेह में विचरण करनेवाले तीर्थंकर को वंदन !

❋ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिंदगी को Update करते रहना चाहिये, जिससे सारी जुनी-पुरानी बातों से मुक्त होकर नये चिंतन के साथ, नई ऊर्जा के साथ हम अपने आप को New Version के रुप में दुनिया से जुड़े हुए रह सके, चिंता गायब-चिंतन प्रारंभ.... क्योंकि चिंता ले चले चिता की तरफ और चिंतन ले चले चैतन्य की तरफ। **आभार- प्रेरणा**

महान जीवात्मा के पूर्वभव

1- श्रीपाल राजा-श्री कतिराजा
2- अजितसेन मुनि-सिंहराजा
3- कुमारपाल राजा-जयताक
4- इलाचीकुमार-अग्निशर्मा ब्राह्मण
5- श्रेणीक राजा- सुमंगल राजा
6- कोणिक-श्येनक तापस
7- समरादित्य केवली-गुणचंद्र
8- मेतार्य मुनि-सौवस्तिक
9- वज्रस्वामी-जृम्भकदेव
10-नंदिषेण-भीमनायक दास
11-शालिभद्र-संगम
12-हेमचंद्राचार्य-यशोभद्रसूरी
13-जम्बुस्वामी-शिवकुमार
14-चिलाती पुत्र-यजदेव ब्राह्मण
15-श्रीमती-बंधुमती
16-मेघकुमार-मेरु प्रभ हाथी
17-आर्द्रकुमार-सोमादित्य (सामायिक)
18-हरिकेशो बल-सोमदेव पुरोहित
19-शुलपाणी यक्ष-धवलनामक बैल
20-मृगापुत्र-राष्ट्रकुट राजा
21-शंखराजा-पोपट
22-सुदर्शन सेठ-सुभग् गोवाल
23-जटायु पक्षी-दंडक राजा
24-ढंढण मुनि-पारासर ब्राह्मण
25-वरदत्तकुमार-वसुदेव सूरि
26-ओढर श्रावक-उदासन मंत्री
27-अकबर बादशाह-मुकुंद ब्रह्मचारी
28-हातिक खंडत-सदृष्ट नागकुमारदेव
29-कृतपुण्य-गोवालपुत्र
30-तेतली पुत्र-महापद्म राजा

वृद्धावस्था में साधना : विशिष्ट आध्यात्मिक अनुभूतियों को पाने वाले आत्मसाधक खीमजीभाई वालजी वोरा

सामान्यतः आत्म साधना के लिए युवावस्था का समय श्रेष्ठ माना जाता है। क्योंकि उस समय में शारीरिक बल सुदृढ़ होने से तप-जप-ध्यान आदि दीर्घ समय तक स्थिरतापूर्वक किये जा सकते हैं। वृद्धावस्था में शारीरिक शक्ति क्षीण होने से साधना दुष्कर हो जाते है। फिर इसमें अपवाद के रुप में कुछ साधक ऐसे पाये जाते हैं जिन्होंने संयोगवशात् जीवन की उत्तरावस्था में साधना का प्रारंभ किया हो और तीव्र वैराग्य, प्रबल मुमुक्षा और निरंतर अखंड पुरुषार्थ के बल से अनुमोदनीय आध्यात्मिक विकास हासिल किया हो। ऐसे साधकों में कच्छ-नाराणपुर गांव के निवासी सुश्रावक श्री खीमजीभाई वालजी वोरा (उम्र 81 वर्ष) का नाम प्रथम पंक्ति में रखा सकता है।

खीमजीभाई के जीवन में बाल्यावस्था में नम्रता, सरलता आदि सद्गुणों के साथ धर्म के प्रति अभिरुचि भी थी। पांच प्रतिक्रमण, चार प्रकरण, कर्मग्रंथ, संस्कृत दो किताब तक अध्ययन उन्होंने किया था। लेकिन बाद में सांसारिक जिम्मेदारियों के कारण से एवं रंगून जैसे क्षेत्र में कई वर्षो तक रहने के कारण से धार्मिक रुचि को बिल्कुल प्रोत्साहन नहीं मिल सका। दाम्पत्य जीवन एवं नौकरी-व्यवसाय में ही जीवन के अमूल्य वर्ष व्यतीत हो गये। कुछ भी आराधना नहीं हो पायी। (हां नौकरी में वे अत्यन्त प्रमाणिकता रखते थे जिससे उन्होंने परिचय में आनेवाले अनेक आत्माओं के हृदय में खूब अच्छा स्थान जमाया था।)

किन्तु करीब 57 साल की उम्र में उनके जीवन में परिवर्तन का निमित्त मिला। किसी व्यावहारिक प्रसंग के कारण उनको संसार की असारता और स्वार्थमयता का बोध हुआ। वैराग्य की ज्योत प्रज्वलित हुई और 60 वर्ष की उम्र में नौकरी में से इस्तीफा देकर मुंबई छोड़कर कच्छ-नाराणपुरा में आ गये। सुसुप्त आध्यात्मिक रुचि पुनः जाग्रत हुई। फलतः उन्होंने आध्यात्मिक ग्रंथों का वांचन-मनन, एकांतवास, मौन, नवकार महामंत्र का एवं ॐ ह्रीँ अर्ह नमः मंत्रका लयबद्ध रुप से जप एवं श्री सीमंधर स्वामी भगवान की आर्द्र हृदय से प्रतिदिन प्रार्थना को उन्होंने साधना को अंग बनाये। हर रोज प्रातःकाल में ढाई घंटे खेत में जाकर और रात को भी वहां एकांत में नवकार महामंत्र का एकाग्रता पूर्वक जप करने लगे। एकाध बार कच्छ-डुमरा गांव में आयोजित ध्यान शिविर में जाकर ध्यानाभ्यास भी चालू रखा। योगीराज श्री आनंदघनजी द्वारा विरचित स्तवन चौबीसी विषयक साहित्य एवं आत्मज्ञानी श्रीमद् राजचंद्र के आध्यात्मिक साहित्य का वे विशेष प्रकार से परिशीलन करने लगे। इसके सिवाय भी उन्होंने योगशास्त्र, योगबिन्दु, अध्यात्म-कल्पद्रुम, योगदृष्टि-समुच्चय, ध्यान दीपिका, ज्ञानसार अष्टक, ललित विस्तरा, उपमिति-भव प्रपंचा कथा, विशेषावश्यक भाष्य, समयसार आदि अनेक आध्यात्मिक ग्रंथों का वाचन किया।

इस प्रकार से एकांतवास और मौन पूर्वक ज्ञान-ध्यान-जप, आत्म चिंतन और प्रभु प्रार्थनादि निमित्तों से अंतःकरण की उत्तरोत्तर विशुद्धि के कारण से उनको विविध प्रकार की आध्यात्मिक अनुभूतियां होने लगी। कभी घंट, झल्लरी, वीणा, पखाराज, शंख, भेरी, दुंदुभि आदि विविध वादित्रों की ध्वनि तुल्य अनाहत नाद का श्रवण भीतर में होने लगा तो कभी आज्ञाचक्र (दोनों भौहों के बीच में) प्रकाश पुंज का दर्शन होने लगा। कभी दीपक, सूर्य, चन्द्र या बिजली जैसे विशिष्ट प्रकाश की अनुभूति होती थी। कभी दिव्य सुगंध का अनुभव होता था तो कभी गहन शांति के बादलों की घटा मस्तक से प्रारंभ होकर क्रमशः पूरे शरीर को घेर लेती हो ऐसी अनुभूति होती थी...!

इस प्रकार के अनुभवों के कारण से उनका साधना के लिए उत्साह अभिवर्धित होता जाता था। लेकिन उनको तो आत्मानुभव की लगन थी, इसलिए वे हररोज महाविदेह क्षेत्र में विहरमान श्री सीमंधर स्वामी भगवान को अत्यन्त आर्द्र हृदय से भाव विभोर होकर प्रार्थना करते थे कि- ''हे प्रभु ! अब मुझे ऐसे सामान्य कोटि के क्षणिक अनुभवों से संतोष नहीं होता है। मुझे तो आपके वीतरागतामय आत्मिक स्वरुप की अनुभूति चाहिये।''

वे हररोज श्री सीमंधर स्वामी भगवंत का सुप्रसिद्ध स्तवन-

''सुणो चंदाजी ! सीमंधर परमातम पासे जाजो
मुझ वीनतड़ी प्रेम धरीने एणी परे तुम संभळावजो...''

अत्यंत भाव विभोर होकर, रोम रोम में से पुकार उठता हो उसी तरह गद्गद कंठ से, आर्द्र हृदय से और अश्रु प्लावित नेत्रों से दिन में तीन-चार बार ऐसे गाते थे कि सुननेवालों का भी हृदय और आंख आर्द्र हुए बिना रह नहीं सकते थे। मानो सचमुच ज्योतिष देवताओं के स्वामी चन्द्र (इन्द्र) अपने सामने ही खड़े हों ओर उनके द्वारा अपनी विज्ञप्ति प्रभुजी से निवेदित करते हों उस तरह इस स्तवन को वे गाते थे। उनके मुख से इस स्तवन को सुनता यह भी जीवन का एक अनमोल लाभ है। हमको 2-3 बार उनके मुख से इस स्तवन को सुनने का और उनकी साधना के साक्षीरुप साधना कक्ष को देखने का लाभ मिला है।

वीतराग परमात्मा के आंतरिक स्वरुप की आंशिक भी अनुभूति प्राप्त करने के लक्ष्य से उन्होंने 6 महिनों तक बिल्कुल एकांतवास में मौन पूर्वक साधना करने का दृढ़ संकल्प लिया था। केवल 2 बार घर जाकर मौन पूर्वक सात्विक भोजन करते थे एवं बाकी का सारा समय घर के पास में पशुओं का चारा रखने के लिए एक छोटा सा कक्ष था, उसमें बैठकर सद्वांचन, आत्मचिंतन, जप, ध्यान, प्रार्थना आदि साधना में निमग्न रहते थे। चित्त में बिना प्रयोजन का एक भी विचार प्रवेश न करे इसके लिए वे अत्यंत जाग्रत रहते थे।

इस तरह साधना करते हुए करीब तीन महिने जितना समय पसार हुआ था। बाद में वि.सं. 2037 में माघ शुक्ल 14, मंगलवार दिनांक 17-2-1981 के दिन दोपहर का करीब 3 बजने का समय था, तब उनको निम्नोक्त प्रकार की विशिष्ट अनुभूति हुई। गर्मी के दिन होते हुए भी बाहर के कोई अशुद्ध परमाणुओं का भीतर में प्रवेश न हो इसी हेतु से साधना कक्ष का एक मात्र दरवाजा था वह भी बंद रखा था, इतना ही नहीं किन्तु अंधकार में चित्त की एकाग्रता शीघ्र होती है इसलिए मस्तक से लेकर पूरे शरीर को काले रंग के कम्बल से ढक कर वे साधना में बैठे थे। नित्य क्रमानुसार श्री सीमंधर स्वामी भगवान को प्रार्थना करके साधना में बैठे थे कि कुछ ही क्षणों में मन अचानक एकदम शांत हो गया और शरदपूर्णिमा के चंद्र से भी करोड़गुनी शीतल, उज्ज्वल तेजोमय पद्मासनस्थ वीतराग आकृति उनके बंद नेत्रों के समक्ष प्रकट हुई जिसकी दीर्घकाल से तीव्र प्रतीक्षा थी वह साक्षात् श्री सीमंधर स्वामी परमात्मा के आंतरिक स्वरुप की मानो झलक थी। खीमजीभाई के रोम-रोम में अवर्णनीय आनंद के पूर उमड़े ! स्वयं की अवस्था भी मानो वीतरागतामय हो गयी ! लेकिन वह आकृति 2-3 मिनिट में अदृश्य हो गयी और खीमजीभाई की एक आंख में से प्रभु दर्शन के कारण हर्ष और अहोभाव जन्य एवं दूसरी आंख में से पुनः प्रभु विरह की वेदना जन्य अश्रुधारा एक घंटे तक अस्खलित रुप से चालू रही !!! कई दिनों तक इस अनुभूति के आनंद का आस्वाद उनके जीवन में चालू रहा।

वे स्वानुभव के आधार से कहते हैं कि- ''अपनी पुकार अगर सच्ची हो, अंतरतम की गहराई से उठती हो, तो प्रभुदर्शन के लिए क्षेत्र और काल का व्यवधान बाधक नहीं बनता है। आज भी यहां बैठे-बैठे श्रीसीमंधर स्वामी भगवान का दर्शन अशक्य नहीं हैं...!

उपरोक्त अनुभव के बाद भी विविध प्रकार की आध्यात्मिक अनुभूतियां उनके जीवन में होती रही हैं। परिणामतः यह दुर्लभ मनुष्य जीवन की सफलता का अहसास उनको हो रहा है।

साधना में विविध अनुभूतियां- खीमजीभाई को आज तक साधना के दौरान अनाहत नाद एवं प्रकाश के दर्शन की कई प्रकार की अनुभूतियां होती रही है उनमें से कुछ महत्व की अनुभूतियों का बयान यहां संक्षेप में दिया जा रहा है। प्रकाश की अनुभूतियों का वर्णन दिनांक के साथ उन्होंने अपनी डायरी में लिखा हुआ है जो आज भी उपलभ्य नहीं हो रहा, फिर भी जितना याद आया है, उन्होंने अन्य साधकों के हितार्थ यहां प्रस्तुत करना उचित समझा है।

1- वि.सं. 2036 में एक दिन रात को 3 बजे अचानक मानो मस्तक फट जायेगा ऐसा जोरदार घंटनाद मस्तक में शुरु हुआ। साधना के दौरान 3 घंटों तक वह घंटनाद चालू ही रहा। उसके बाद वह धीरे-धीरे मंद होता चला। बाद में थोड़े-थोड़े दिनों के व्यवधान पूर्वक क्रमशः झल्लरी नाद.... पखावज नाद.... तबला नाद.... वीणा नाद.... शंख नाद.... भेरी नाद.... दुंदुभि नाद.... महा नाद.... (सिंह नाद....) मेघ नाद....समुद्र नाद.... इत्यादि नाद के अनुभव होने लगे।

2- वि.सं. 2036 से प्रकाश की भी विभिन्न प्रकार की अनुभूतियां होने लगी।

3- वि.सं. 2048 मृगशीर्ष शुक्ल 12 से फाल्गुन शुक्ल 6 तक पौने तीन महिनों के दौरान प्रतिदिन दोनों आंखों में से प्रकाश के कण बाहर निकलते हुए प्रतीत होने लगे।

4- उसके बाद फाल्गुन शुक्ल 6, दिनांक 10-3-1992 के दिन रात को 3 बजे साधना में विशिष्ट अनुभव

हुआ। एक लम्बी गुफा थी उसके ऊपर छत नहीं थी। उसके एक छोर में से सूर्य समान जाज्वल्यमान प्रकाश का जोरदार प्रवाह प्रारंभ होकर दूसरे छोर में से बाहर निकलता हुआ अनुभव में आया। परिणामतः वहां का संपूर्ण आकाश मंडल प्रकाश से व्याप्त हो गया था। निरंतर 3 घंटे तक यह अनुभव चालू रहा था!

5- सं. 2053 में मृगशीर्ष शुक्ल 10, गुरुवार, दिनांक 19-12-1996 के दिन सुबह 9.30 बजे आज्ञा चक्र में मणिरत्नों का प्रकाश पुंज प्रवेश कर रहा है और भीतर का संपूर्ण आकाश प्रदेश प्रकाश से व्याप्त हो गया है ऐसी अनुभूति करीब 5 मिनट तक चालू रही।

6- उपरोक्त अनुभूति के तीन दिन बाद में दिनांक 22-12-1996 के दिन सुबह 9.30 बजे साधना के दौरान मस्तक में सहस्रारचक्र में से हजारों चन्द्र से भी अधिक शीतल एवं जाज्वल्यमान प्रकाश आकाश में जा रहा है ऐसा दिव्य अनुभव हुआ जो करीब 5 मिनिट तक चालू रहा था।

7- दिनांक 16/17-9-1997 की रात को 12 से 2 बजे के दौरान निद्रा में यकायक ॐकार नाद नाभि से प्रारंभ होकर हृदय, कंठ और ललाट में से पसार होकर ब्रह्मरंध्र में प्रवेश करता हुआ अनुभव में आया। इस नाद के साथ ॐ ह्रीँ अर्ह नमः का लयबद्ध जप सारी रात स्वयंमेव चालू रहता था।

8- दिनांक 18/19/20-9-1997 की रात को 12 से 2 के बीच तुंही-तुंही का नाद हृदय में प्रारंभ हुआ जो 15 मिनट तक चलता था।

ये सभी अनुभूतियां अंतःकरण की विशुद्धि के संसूचक है। आत्मा की अत्यंत लघुकर्मिता के ज्ञापक हैं। निरंजन-निराकार परमानंदमय आत्मानुभव की अत्यंत नजदीक की उत्तम अवस्था के द्योतक है। विशेष तो ज्ञानी भगवंत या उच्चतर भूमिका वाले साधक या सिद्धयोगी महापुरुष कह सकते हैं।

महान योगीराज श्री आनंदघनजी महाराज द्वारा विरचित स्तवन चौबीसी के विषय में स्वानुभव द्वारा सुन्दर विवेचन खीमजीभाई ने हस्त लिखित पोथी में लिखा है जो आत्मार्थी मुमुक्षुओं के लिए खास पठनीय है।

इस दृष्टांत को पढ़कर कोई भी ऐसा नहीं सोचे कि- ''हम भी इस तरह उत्तरावस्था में आत्म साधना कर लेंगे, अभी तो अर्थोपार्जन करके मौज कर लें....'' क्योंकि जीवन का कोई भरोसा नहीं है, इसलिए धर्मकार्य में विलंब करना श्रेयस्कर नहीं होता।

संयोगवशात् जो मनुष्य युवावस्था में साधना नहीं कर सकें है और जिनकी उत्तरावस्था का प्रारंभ हो चुका है ऐसे मनुष्य हताश न बनें, किन्तु इस दृष्टांत से प्रेरणा पाकर ''जब जागे तब सुबह'' समझकर आत्म साधना में आगे बढ़ें यही शुभेच्छा।

खीमजीभाई हाल संयोगवशात् मुंबई में अपने सुपुत्र मणिलालभाई के साथ रहते हैं। वृद्धावस्था के कारण ब्राह्य दृष्टि से साधना के क्रम में थोड़ी कमी जरुर हुई है मगर अभ्यंतर भावधारा तो उत्तरोत्तर विशुद्ध-विशुद्धतर बनती जा रही है ऐसी प्रतीत उन्हें हो रही है।

✽ सब जीवों को अप्रिय होने पर भी जिस दुःख का अनुभव करना पड़ता है वह दुःख सकारण होना चाहिये, इस भूमिका से विचारवान की विचार श्रेणी मुख्यतया उदित होती है और उस परसे क्रमशः आत्मा, कर्म, परलोक, मोक्ष आदि भावों का स्वरुप सिद्ध हुआ हो, ऐसा लगता है।

तीर्थंकर परमात्मा के 34 अतिशय

जन्म से भगवंत को 4 अतिशय होते है:-

1- भगवंत का देह व्याधि, प्रस्वेद और मेल रहित होता है।

2- भगवंत का श्वासोश्वास कमल की तरह कोमल होता है।

3- भगवंत के शरीर के खून और मांस श्वेत होता है।

4- भगवंत का आहार और निहार अवधिज्ञानी के अलावा कोई देख नहीं सकता।

देवता कृत 19 अतिशय होते है:-

1- भगवंत जहां जहां चलते है साथ में धर्म का चक्र चलता है।

2- आकाश में दोनों तरफ श्वेत चामर चलता है।

3- आकाश में मणि का सफ्टिकमय सिंहासन चलता है।

4- भगवंत के मस्तक पे आकाश में 3 छत्र चलते है।

5- भगवंत के आगे आकाश में इंद्र रत्न का ध्वज ले के चलते है।

6-प्रभु के कदम सुवर्ण के कमल पर पड़ते है।

7-प्रभु को देशना देने के लिये देवता समवसरण की रचना करते हैं।

8- प्रभु जब देशना देते है तब पूर्व दिशा में मुख होता है लेकिन बाकी की 3 दिशा में प्रभु की कृपा से देव प्रभु जैसा अद्दल प्रतिबिम्ब बनाते हैं।

9- देवता प्रभु के समवसरण में अशोक वृक्ष की रचना करते है।

10-भगवंत जहां चलते है वहां कंटक उल्टे हो जाते है।

11-पवन अनुकूल और शीतल हो जाता है।

12-रास्ते के वृक्ष प्रभु को नमन करते हैं।

13-समवसरण के ऊपर पंखी प्रभु की प्रदिक्षणा करते है।

14-मेघकुमार देव सुगंधित जल की वृष्टि करते है।

15-समवसरण की 1 योजन भूमि में 6 ऋतु के खिले हुए पुष्प की जानु प्रमाण वृष्टि होती है।

16-प्रभु की दाढ़ी मुछ बाल और नाखून बढ़ते नहीं है।

17-कम से कम 1 करोड़ देव कभी भी प्रभु की सेवा में होते है।

18-भगवंत जहां जाते है वहां सब ऋतु अनुकूल हो जाती है।

19-देवता देव दुदुम्भी का नाद करते है।

केवलज्ञान के बाद भगवंत को 11 अतिशय होते है:-

1- भगवंत का समवसरण 1 योजन का होता है फिर भी करोड़ों लोग का समावेश हो सकता है।

2- भगवंत की देशना सभी जीव अपनी भाषा में समझते है।

3- प्रभु के मस्तक के पीछे हजारों सूर्य से भी तेजस्वी भामंडल होता है।

4- प्रभु जहां विचरते है वहां के 125 योजन विस्तार में कोई रोग नहीं होता।

5- 125 योजन विस्तार में वेर भाव का नाश होता है।

6- 125 योजन विस्तार में अतिवृष्टि नहीं होती।

7- 125 योजन विस्तार में अनावृष्टि नहीं होती।

8- 125 योजन विस्तार में भय का नाश होता है।

9- 125 योजन विस्तार में अकाल मृत्यु नहीं होती।

10-125 योजन विस्तार में चूहे या तीड़ जैसे जीव उत्पन्न नहीं होते।

रावण का सारे भूमंडल पर दबदबा था। सभी राज्य और सम्पन्न व्यक्ति उसे कर देते थे, पर उससे उसकी तृष्णा शांत न हुई। उसने ऋषियों से भी कर वसूलना आवश्यक समझा। सलाहकारों ने ऋषियों की शक्ति और उनके क्रोध की बात समझाने का प्रयास भी किया, तो अहंता ने उसे कुछ महत्व न दिया। उसने व उसके साथियों ने ऋषियों के कार्य में विघ्न डाल-डालकर उन्हें रुष्ट किया। ऋषियों ने कर के रुप में एक-एक बूंद रक्त घड़े में भरकर भेज दिया, उसी से सीता का जन्म हुआ और रावण को सपरिवार विनाश के गर्त में जाना पड़ा।

जिसने हमें सोचना सिखाया

✻ रुपनारायण काबरा

शक्ल से विचित्र बदसूरत-सा, आगे का ललाट चौड़ा गंजा, गोल गुम्बद-सा, ऊपर की ओर उभरी नाक, लहराती दाढ़ी, लोग उसकी शक्ल का मजाक उड़ाते थे और वह स्वयं भी उस मजाक में सक्रिय सहयोग देता था। एक गरीब, निठल्ला था वह। पेशा था पत्थर तोड़ना, पत्थर का काम। अच्छा मूर्तिकार भी तो नहीं था, बस यूं ही नाम का मूर्तिकार था। काम बस उतना ही करता था, जितने से वह अपनी पत्नी व बच्चों सहित भूखा न मरे। उसको तो अच्छा लगता था बातें करना। उसकी पत्नी झगड़ालू थी, जिसकी जुबान क्या थी, बस चाबुक थी। पत्नी के कारण उसे घर से बाहर रहना बहुत अच्छा लगता था।

सूर्योदय से पूर्व वह उठता, जल्दी-जल्दी शराब में डूबो कर रोटी खाता, एक चोगा पहनता और घर से चल देता-किसी दुकान, मंदिर, मित्र का मकान या फिर गली या नुक्कड़- कहीं के भी लिए जहां बैठकर बहस कर सकें, बातें कर सके। सारे शहर में उसकी बहस एवं उसके तर्क की चर्चा थी। शहर का नाम थ एथेन्स और वह व्यक्ति था सुकरात।

वह शक्ल-सूरत से ही विचित्र नहीं था, उसके विचार, उसकी धारणाएं भी विचित्र थी और अपने विचारों के प्रति उसमें एक दृढ़ता थी, जो लोगों को अच्छी भी लगती थी। उसके तर्क में एक आकर्षण था।

डेल्फी के सुप्रसिद्ध वक्ता से उसके एक मित्र ने पूछा- **''एथेन्स का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति कौन है ?''** सभी को आश्चर्य हुआ जब उसने इस निठल्ले सुकरात का नाम लिया। इस पर सुकरात ने कहा-**''मुझे सबसे बुद्धिमान इसलिए बताया गया है कि सारे एथेन्स में एक मात्र मैं ही ऐसा हूं जो यह जानता कि वह कुछ नहीं जानता है।''**

यह थी उसकी चतुरतापूर्ण, शरारत भरी नम्रता और इसका उसे वाद-विवाद में लाभ भी मिलता था। यह जताते हुए कि उसे स्वयं उत्तर नहीं आता है, वह लोगों से विचित्र सवाल करके उनसे कुछ भी मनवा लेता था।

स्पष्ट चिंतन अर्थात् तर्कसंगत मनन का वह अगुआ था। गली-गली में वह तर्क की बात करता फिरता था, ठीक उसी प्रकार जैसे कि चार सौ वर्ष बाद ईसा मसीह ने फिलिस्तीन में घूम-घूम कर प्रेम का संदेश व उपदेश दिया। ईसा की तरह बिना एक शब्द लिखे उसने भी लोगों के मन-मस्तिष्क को इतना प्रभावित किया,जितना शायद एक पूरा पुस्तकालय भी न कर सके।

वह किसी भी विशिष्ठ नागरिक के पास जाता और उससे उसके स्वयं द्वारा कहीं गई बात पर ही तर्क करता, विमर्श करता। उदाहरण के तौर पर एक महाशय ने देशभक्ति पर व्याख्यान दिया और अंत में निष्कर्ष के रुप में साहस तथा देश की खातिर शान से जान तक देने की बात कही। सुकरात उनके पास गया और पूछा- **''साहस का अर्थ है खतरा आने पर डटे रहना, जगह नहीं छोड़ना लेकिन क्या बुद्धिमत्तापूर्वक सामरिक नीति के अनुसार डटे रहने की बजाय हटना हितकर हो तब भी ?**

''अरे नहीं भाई, उस स्थिति में डटे रहना अवश्य ही उचित नहीं होगा।''

इसका अर्थ हुआ कि साहस न डटे रहने में है, न हट जाने में, तो फिर साहस है क्या ? वे महाशय टांट खुजाने लगे और बोले-आपने तो मुझे चक्कर में डाल दिया है। मैं ठीक से नहीं बता सकता कि साहस क्या है। सुकरात ने कहा- जानता तो मैं भी नहीं, लेकिन मैं तो मात्र इतना ही कहना चाहूंगा कि **खतरे की स्थिति में अपने मस्तिष्क को संतुलित रखकर विवेकपूर्ण कदम उठाना ही साहस है।** भीड़ में से कोई बोला- बात तो ठीक लगती है। सुकरात उस व्यक्ति की ओर मुखातिब हो गए और बोले- ''अच्छा तो हम फिलहाल सहमत है न ? क्योंकि बड़ा कठिन प्रश्न है यह कि साहस एक दृढ़तापूर्ण अच्छा निर्णय है, तो फिर साहस हुआ प्रत्युत्पन्न मति और इसका विपरीत हुआ भावना और संवेगों का आधिपत्य जो कि मस्तिष्क को सही निर्णय लेने से रोकते हैं।''

ऊपर का संवाद प्रकट करता है कि सुकरात ने सभ्यता के इतिहास को कैसे एक महत्वपूर्ण मोड़ दिया होगा- एक चिंतन का मोड़। **उन्होंने सिखाया कि हर अच्छा आचरण मस्तिष्क द्वारा नियंत्रित एवं परिचालित होता है तथा समस्त गुणों का आधार है भावना पर विवेक का सत्तात्मक नियामक प्रभाव।**

सुकरात कहते थे- विचार-विमर्श से पहले हम यह तो सोच लें, तय कर लें कि हम किस संबंध में बातचीत कर रहे है। हमें अपनी वार्ता के विषय-बिन्दु पर, मूलबिन्दु पर स्पष्ट होना चाहिये। यह था उनका चिंतन सूत्र।

सुकरात से काफी पहले तक लगभग तीन पीढ़ी पूर्व तक यूनानी दार्शनिकों ने प्रकृति और सितारों, आकाशीय पिंडों का अध्ययन किया और उनके इस चिंतन का सुंदर परिणाम निकला- ''विज्ञान''। सुकरात ने जीवन को जीने की कला का विज्ञान-सम्मत अध्ययन किया। इस काल में यूनान का प्रभाव फारस, काला सागर तथा पूरे भूमध्य सागरीय देशों में था। संसार भर के कलाकार, कवि, वैज्ञानिक, दार्शनिक

विद्यार्थी एवं शिक्षक यूनान में आते थे। सिसली तक के अमीर व्यक्ति अपने पुत्रों को सुकरात से शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजते थे। शिक्षा का तरीका यही था कि सुकरात के पीछे-पीछे घूमो और लोगों से उनकी बहस और तर्क सुनो, आवश्यकतानुसार स्वयं भी भाग ले सकते हो। महान सुकरात अपने शिष्यों से कभी कोई शुल्क नहीं लेते थे। यूनान का भावी समग्र दर्शन-चिंतन तथा रोम का भी सब उसी से प्रभावित है। सबके मूल में सुकरात का दर्शन एवं चिंतन धारा है। प्लेटो सुकरात के शिष्य थे तथा अरस्तु प्लेटो के। पाश्चात्य दर्शन सही अर्थों में काफी कुछ सुकराती विरासत है, उनके प्रभाव में है।

यदि सुकरात अपने चिंतन की खातिर शहीद नहीं हो जाते तो संभवतः इतना प्रभावित नहीं कर सके होते। कितना विचित्र लगता है यह जानकर कि एक व्यक्ति को उसके नये विचारों, नई परिभाषाओं के कारण प्राणदंड दिया गया और आज भी जब दकियानूसी, रुढ़िवादिता से ग्रस्त लोग विचारों की नई रोशनी को नहीं स्वीकारते, विरोध करते है, अत्याचार करते है तो हमें जो कुछ सुकरात के साथ हुआ, उसका आश्चर्य नहीं होता।

नवयुवकों ने सुकरात को स्वीकारा पर दकियानूसी, रुढ़िवादी, परंपरावादी, अंधविश्वासी, पुरातन-पंथियों ने उसे पथ-भ्रष्ट कहा। सुकरात के विरुद्ध लगाए गए दोषों में दो ही प्रमुख है- प्रथम-वह शहर में प्रतिष्ठापित शहर के देवी-देवताओं को नहीं मानता था। दूसरा उसने युवाओं को पथभ्रष्ट किया।

आज तक यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि सुकरात पर दोषारोपण करने वालों, अभियोग चलाने वालों का क्या मन्तव्य था लेकिन यह सच है कि युवा उसे प्यार करते थे। नये विचारों का आकर्षण, चिंतन की प्रक्रिया, तर्क से सत्यता की ओर बढ़ना-यह सब युवाओं को अच्छा लगा जबकि उनके माता-पिता सोचते थे कि ये क्रांतिकारी विचार घातक है। स्पार्टा से यूनान के युद्ध में जब सुकरात का एक शिष्य अपनी स्वयं की कमजोरी एवं स्वार्थ से शत्रु से जा मिला तो हारे हुए यूनानियों का सारा आक्रोश सुकरात पर था। बलिदान का बकरा जो ढूंढना था उन्हें ? जबकि सुकरात का इसमें कहीं कोई दोष नहीं था।

पांच सौ एक नागरिकों की ज्यूरी द्वारा सुकरात के मुकदमे की सुनवाई हुई और केवल 60 मतों के खातिर उसे प्राणदंड दिया गया। बहुत कम लोगों को सुकरात के मरने की आशा थी। यूनान में यह कानूनी प्रावधान था कि यदि वह अपनी गलती मान लेता, अपराध के लिए क्षमा मांग लेता, अपने को अपराधी मानता, पश्चाताप करता तो इन साठ में से तीस से ऊपर सदस्य अपना निर्णय बदल देते, लेकिन वह अपने सही दृष्टिकोण के प्रति दृढ़ रहा।

जब एक शिष्य जेल में उससे आकर बोला- हमने आपके बच निकलने की पूरी योजना बना ली है। तो वे बोले- मेरी मान्यता है कि हर अच्छा नागरिक अपने शहर के कानून को माने। एथेन्स के कानून ने मुझे मौत की सजा दी है और यह तर्कसंगत है कि मुझे इसे मानना चाहिए क्योंकि मैं स्वयं को एक अच्छा नागरिक मानता हूं। शिष्यों ने विरोध किया- आप तर्क को दूर तक खींच रहे है। हमारे दृष्टिकोण से आप इसका दुरुपयोग कर रहे हैं। लेकिन वह वृद्ध दृढ़ रहा।

प्लेटो ने सुकरात की धरती पर आखिरी रात को ''फीडो'' में यह विचित्र किया है- सुकरात की वह रात अन्य रातों जैसी ही थी। अपने युवा शिष्यों, साथियों के साथ दार्शनिक चिंतन पर सदैव की भांति बहस कर रहे थे, विषय था- क्या मृत्यु के उपरांत भी कोई जीवन है ? सुकरात इसके पक्ष में थे, लेकिन उन्होंने खुले मस्तिष्क से अपने शिष्यों के विरोधी विचारों को सुना। यद्यपि कुछ ही घंटों में वे मरने वाले थे, लेकिन उन्होंने शांतिपूर्वक दृढ़ता से मृत्यु के उपरांत जीवन की संभावना पर अपने तर्क प्रस्तुत किये।

''आखिर वह अंतिम घड़ी आ गई। सुकरात के शिष्य एवं मित्र सभी उनके चारों ओर इकट्ठे हो गए। प्रिय शिक्षक को विषपान करते देखने हेतु सुकरात ने स्वयं संदेश भेजकर जहर मंगवाया और जब सेवक जहर लेकर आया तो सुकरात ने अपनी शांत वाणी में कहा- अरे भाई, इसे कैसे जान लेना है ? मुझे क्या-क्या करना है तुम्हीं बताओ, यह सब तुम्हीं जानते हो। सेवक बोला- आप इस विष को पी डालिए, फिर उठिए और थोड़ा चहलकदमी करें जब तक कि आपके पैर भारी होकर शिथिल न हो जाए और फिर आप लेट जाएं तब सुन्नता आपके हृदय तक पहुंच जाएगी।

सुकरात ने वही किया जो सेवक ने बताया, केवल बीच में थोड़ा रुके और सुबकते, सिसकते, रोते हुए शिष्यों को डांटने के लिए यह कहते हुए कि क्या मैं कोई गलत काम कर रहा हूं जो तुम रोते हो ? उनके अंतिम विचारों में थी एक छोटी सी कृतज्ञता की याद जिसे वे भूल गए थे- उनहोंने अपने सिर और चेहरे को ढंके वस्त्र को हटाया और कहा- क्रिटो, एसक्लेपियम से मैंने एक मुर्गा उधार लिया था- वह उसे अवश्य दे देना और उन्होंने अपनी आंखें बंद कर ली तथा पुनः चेहरे को ढांप लिया और जब क्रिटो ने पूछा कि कोई और अंतिम निर्देश ? उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

प्लेटो लिखते है- ''ऐसा था वह अंत हमारे मित्र का, सबके मित्र का, हमारे पथ-प्रदर्शक का जो कि हमारी जानकारी में सबसे श्रेष्ठ, सही और बुद्धिमान है, जिसने हमें सोचना सिखाया।''

पर नारी से दूर रहो....

✻ रविलाल वोरा, मुंबई

रावण रुप की फिसलन यहीं से फिसल गये। एक औरत के प्रति जमे काम ने रावण को इतना बदनाम कर दिया है कि आज भी इसके नाम का पुतला जलाया जाता है। माँ, बहन, पत्नी और बेटी। इसमें तीन रिश्ते पूर्ण पवित्रता के है और पत्नी का हिस्सा जीवन में एक चौथाई है। मन्दोदरी जैसी सुन्दर पत्नी के होते हुए माँ, बहन और बेटी के रिश्तों को बदनाम कर दिया। शास्त्रकारों ने पर नारी को माँ का दर्जा दिया है और रावण का पतन हो गया, इसका एक ही कारण है पर नारी पर मोह।

तुलसीदास अपनी पत्नी के मोह में अंधे हो गये थे, उसको कभी पीहर जाने नहीं देते थे। एक दिन उनकी पत्नी पीहर चली गई, उसके मोह में अंधे तुलसीदास अंधेरे में उसके ससुराल गये, ससुराल के द्वार बंद थे। वह एक सांप को रस्सी का टुकड़ा समझकर उसके सहारे ऊपर चढ़कर भीतर गये, उनकी पत्नी रत्नमाला को अच्छा नहीं लगा वह बोली- ''**जितना मोह मेरे पर लगाया है उतना अगर राम से लगाते तो तिर जाते।**'' वह शब्द तुलसीदासजी के हृदय में गहरे उतर गये और उनकी राह बदल गई। इसलिये हमारे शास्त्रकारों ने कहा है- ''**पराई दौलत और पराई औरत से बचकर रहना चाहिये।** चित्तौड़ में अपने शील की रक्षा के लिये सात सौ रानियों ने जीतेजी अग्नि में कूदकर अपने शील की रक्षा की।

हम अस्थिर होकर मोह में पड़ते है और इसी तरह से दुर्योधन और दुःशासन ने अपनी भाभी के द्वेष और काम बुद्धि से भरे दरबार में निवस्त्र करना चाहा, उस वक्त दरबार में उनके गुरु और घर के बड़ेवडील भी मौजूद थे, जब चीरहरण हो रहा था तब यह देख रहे थे पर किसी ने दुःशासन को रोका नहीं। यह बुद्धि के कारण उनका मनन हो गया और द्रोपदी ने संकल्प लिया था कि इन बालों को दुःशासन के खून से न धो लूं तब तक इन्हें बांधूगी नहीं और बाद के इतिहास हम सबको मालूम है। दुःशासन से दासी भी अछूत नहीं थी। इनके महल में अनेक औरत असुरक्षित थी।

मोह अंधा होता है। वह जात, कुजात, पद प्रतिष्ठा कुछ नहीं देखता है। नारी के मोह में बड़े-बड़े युद्ध हुए है। महाभारत के युद्ध में भारी सेना मारी गई।

सोने की लंका जलकर नष्ट हो गई। मोह में अंधे पुरुष अपने ही हाथों अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारकर नष्ट हो जाते है। अपने ही हाथों अपने भूत, भविष्य और वर्तमान में ही स्वयं आग लगा लेते है। चरित्र सिर्फ नारी का नहीं परन्तु पुरुष का भी होता है। हमारे पुरुष प्रधान समाज में यह समझ रखा है कि सारी नीति मर्यादाएं और बंधन नारी के लिये है। स्वयं को फलपातीत समझकर स्वतंत्र, स्वच्छन्द बना लिये है, भले ही पुरुष इस जन्म में पाप करके छीपा लेते है। यह पाप कभी न कभी सिर चढ़कर बोलता ही है। यह सोचता है कि नारी मिट्टी की तरह है। अतः उसमें पाप का बीज फलित होता है। अतः मैं कितने ही पाप क्यों न कर लूं हमेशा निष्पाप रहूंगा, मगर उसकी यह सोच नितान्त अज्ञानता से पूर्ण है। पाप तो स्त्री करें या पुरुष, कर्म का कानून कर्म की अदालत में सबको दण्ड देता है। सबको अपने पाप का फल भुगतना ही पड़ता है। अतः मोह का पतन का कारण समझकर इसका त्याग करें।

उंगली- *गांधीजी के किसी आश्रमवासी से कोई दुराचार हो गया। किसी अन्य ने इसकी शिकायत गांधीजी से अज्ञात पत्र लिखकर की। पत्र पढ़कर गांधीजी कुछ खिन्न हो गए। उसी शाम प्रार्थना के पश्चात गांधीजी गंभीर स्वर में बोले- ऐसे विषय में गुमनाम तथा अज्ञात पत्र लिखना गलत है।*

हमें सदा यह याद रखना चाहिये कि जब हम किसी के पाप की ओर उंगली उठाते हैं तो तीन उंगलियाँ अपनी ओर होती है।

✻ जो वेदना पूर्वकाल में सुदृढ़बंधने से जीव ने बांधी है, उस वेदना के उदय प्राप्त होने पर उसे इन्द्र, चन्द्र, नागेन्द्र या जिनेन्द्र भी रोकने को समर्थ नहीं; उसका उदय जीव को वेदन करना ही चाहिए। अज्ञान-दृष्टि के जीव उसका वेदन खेद से करें, तो भी वह वेदना कुछ घटती नहीं या टल जाती नहीं। सत्य-दृष्टि के जीव शान्त-भाव से (उसका) वेदन करें, तो वह वेदना बढ़ नहीं जाती; किंवा वह नवीन बंधका हेतु नहीं होती। इससे पूर्व की बलवान निर्जरा होती है। आत्मार्थी को यही कर्त्तव्य है।

''मां'' से बढ़कर न दूजा

* एस.सी.कटारिया, रतलाम

माँ से बढ़कर न कोई मजहब और न कोई शास्त्री, माँ के बिना जीवन वैसे ही सूना है जैसे बिना माली का बगीया या बिना मांझी के नांव। जिस व्यक्ति के दिन की शुरुआत माता-पिता को प्रणाम करने से और दिन का समापन उनके चरणों की सेवा से होती है, वह किसी संत की तरह आदरणीय बन जाता है। स्वर्ग भले ही आसमान में होगा पर उसका सकून तो माँ के चरणों में समाया है, कहा भी गया है कि ऊपर जिसका अंत नहीं उसको आंसमा कहते है, जहां में जिसकी अंत नहीं उसे ''माँ'' कहते हैं। आज राम और महावीर बनने से पहले जरुरत श्रवण कुमार बनने की है, हमें यह कहते हुए गर्व की अनुभूति होती है कि हम उस माता-पिता की संतान है जिन्होंने संन्यास धारण कर दीक्षाएं ली है इसके साथ ही वे संतानें भी है, जिन्होंने माँ-बाप की सेवा करने के लिये संयम को धारण कर लिया। यह भारत की प्राचीनतम संस्कृति है कि जिसमें हर ''माँ'' चाहती है कि उसका बेटा श्रवण कुमार बने, बने भी लेकिन खेद है कि पाश्चात्य सभ्यता ने हमारे यहां की सभ्यता पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि हर माँ चाहती है कि उसका बेटा श्रवण कुमार बने लेकिन वह पति को श्रवणकुमार बनने में स्पीड ब्रेकर बन जाती। इसमें माँ व बेटे के पवित्र रिश्तों में आदिम युग से लगाकर आज तक कोई फर्क नहीं पड़ा- माँ के लिये बरबस, सभी के मुंह से यह उद्गार निकलते है कि ''हे माँ हम सब, तेरा ही हरदम करते वंदन, माँ, तुझको हम सभी का है अभिनंदन, आयल तेरा जननी हर जन्म में तेरा पाएं, भगवान को सादासी कर अपने भाग पर इतराए।'' पू.माँ वंदना की वंदना की लिए सारे महापुरुषों की वंदना कहते है कि अपने आप हो जाएगी। दुनिया में आज तक ऐसा कोई महापुरुष नहीं हुआ जो माँ से बड़ा हो। दुनिया में ऐसा कौन होगा जो माँ के दूध का कर्जदार नहीं होगा। माँ के ''म'' में महावीर, महादेव, मोहम्मद तीनों छीपे है, माँ के ''अ'' में अल्लाह आदि ब्रह्मा तथा आदिनाथ समाए हुए है। माँ का हमेशा एक ही रुप होता माँ चाहे वह पति की माँ हो पत्नी की, लड़के की हो या लड़कियों की हो या पड़ोसभर की हो। माँ न तो सोतेली होती या असली नकली पिताश्री की जो धर्म सहायिका बन कर उनकी सेवा करने वाले बच्चों की वह माँ होती है। माँ की ममता से जुड़ेजीवंत घटना प्रसंगों के अनेक ऐसे उदाहरण है जो अनुकरणीय है और कुछ ''माँ'' पवित्र संबंध को कलंकित भी करते है। एक छोटी सी लघु रचना यह स्पष्ट करती है कि माँ-माँ ही होती है। अपनी दृष्टि निष्पक्ष हो, आईए कथा के सारांश में चलते हैः-

पति के घर में प्रवेश करते ही पत्नी का गुस्सा प्रेशर कुकर की सिटी की तरह फूट पड़ा। पूरे दिन कहां रहे। आफिस में पता किया, वहां भी नहीं पहुंचे। आखिर मामला क्या है ? वो-वो-मैं-मैं पति की हकलाहट पर झल्लाते हुए पत्नी फिर बरसी- बोलते क्यों नहीं हो ? कहां चले गये थे ? ये गंदा थैला और कपड़ों की पोटली किसकी उठा लाये ? वो मैं माँ को लाने गांव चला गया था। पति थोड़ी हिम्मत कर बोला। क्या कहां ? तुम्हारी माँ को यहां ले आये ? शर्म नहीं आई तुम्हें ? तुम्हारे भाईयों के पास इन्हें क्या तकलीफ है ? आग बबूला थी पत्नी। उसने पास खड़ीफटी साड़ी से आँखें पोछती बीमार वृद्धा की तरफ देखा तक नहीं। इन्हें मेरे भाईयों के पास नहीं छोड़ा जा सकता। तुम समझ क्यों नहीं रही। पति ने दबी जबान से कहा- क्यों ? यहां कुबेर का खजाना है ? तुम्हारी सात हजार रुपट्टी की पगार में बच्चों की पढ़ाई और घर का खर्च कैसे चला रही हूं, मैं ही जानती हूं। पत्नी की आवाज और ऊंची हो गई थी। अब ये हमारे पास ही रहेगी। पति ने अब जरा जोर से कठोरता पूर्वक बोला। मैं कहती हूं इन्हें इसी समय वापस छोड़कर आओ, वरना मैं इस घर में एक पल भी नहीं रहूंगी और देखो इन महारानीजी को भी यहां आते जरा भी लाज नहीं आई ? कहते हुए पत्नी ने बूढ़ी औरत की तरफ देखा तो पांव तले जमीन ही सरक गई। झेपते हुए पत्नी बोली- ''माँ''। तुम ? हाँ बेटी। तुम्हारे भाई और भाभी ने मुझे घर से निकाल दिया है, दामादजी को फोन किया तो ये मुझे यहां ले आये। बुढ़िया ने अपने आँखों में आये आँसूओं को पोछते हुए कहा तो पत्नी गदगद नजरों से पति की ओर देखा और मुस्कराते हुए बोली- ''आप'' भी ''बड़े वो हो।'' पहले क्यों नहीं बताया कि मेरी ''माँ'' को लेने गये थे...! आखिर माँ तो माँ ही होती है, चाहे पति की हो या पत्नी की....!

**** अनंतकाल से जो ज्ञान संसार का कारण होता था उस ज्ञान को एक समयमात्र में जात्यंतर करके संसार की निवृत्तिरुप जिसने बनाया उस कल्याणमूर्ति सम्यग्-दर्शन को नमस्कार हो !***

धर्म की पहचान ?

✻ कुसुम जैन

भारत में जन-जन का जीवन धर्म से सराबोर रहता है- इस बात की गवाही हमारी सहस्राब्दियों पुरानी संस्कृति दे रही है। जबसे आदमी को यह होश आया कि वह आदमी है, तब से आज के वैज्ञानिक आदमी की कहानी कैसी गढ़ी गई, उसका प्रमाण भारत के उन धर्मग्रंथों में सहज ही मिल जायेगा, जिन धर्मग्रंथों ने भारत की सारी दुनिया में विश्वगुरु का दर्जा दिलाया किन्तु आज धर्म के नाम पर जितना दुराचार जितनी हिंसा, लूट-खसोट भारत में हो रही है, उसने भारतीय संस्कृति के उज्जवल मस्तिष्क पर एक कलंक चिन्ह लगाया है। बात कड़वी है पर सच है। हिन्दू-मुस्लिम दंगे, शिया-सुन्नी संघर्ष, दिगम्बर-श्वेताम्बर कलह, अकाली निरंकारी झगड़े, रोमन-कैथोलिक प्रोटेस्टेन्ट विवाद जब भी लोग देखेंगे-सुनेंगे तब उनके मन में श्रद्धा का स्थान घृणा ले लेगी, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। एक ही सवाल मन को कुरेदेगा-क्या ये संघर्ष, कलह, झगड़े या विवाद धर्म की बदौलत होते हैं ? धर्म के लिये होते है ?

वस्तुतः कोई भी धर्म यह उपदेश नहीं देता कि उसका अनुयायी दूसरे अनुयायी पर हमला करें, उसे मारे-पीटे-काटे, कोई भी धर्म मानव-मानव के बीच दरार पैदा करने की शिक्षा नहीं देता और न ही धरती की छाती पर अलग-अलग लकीरें खींच कर अपने व्यापक स्वरुप को संकीर्णता में बांधने की अनुमति देता है। देश की अखंडता और एकता को टुकड़े-टुकड़े कर देने का आदर्श-आचरण किसी भी धर्मगुरु ने स्वीकारा हो, यह सुनने तक में नहीं आया। अकेले भारत में राम, कृष्ण, शिव, विष्णु, गणपति, दुर्गा, सूर्य न जाने कितने देवी-देवताओं के नाम पर अलग-अलग धर्म सिद्धांतों की, धर्मग्रंथों की सर्जनाएं हुई। वर्धमान-महावीर गौतम-बुद्ध जैसे धर्म आकाश के दैदीप्यमान सितारे यहां जन्में किन्तु यह देखने-सुनने-पढ़ने में नहीं आया कि उन्होंने धर्म के नाम पर कभी ऐसा उन्माद फैलाया हो, जिसमें आम आदमी की जिन्दगी असुरक्षित बन गई हो, सामाजिक व्यवस्था और अनुशासन छिन्न-भिन्न हो गया हो। बजाए इसके इन सबकी यही कोशिश रही है- आदमी-आदमी के बीच में पड़ी जाति-धर्म की दरारें पट जाएं। परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा की भावनाएं विगलित हों, स्नेह और बंधुत्व का सद्भाव उनमें भरे।

वस्तुतः हमारे देश में धन-सम्पत्ति, सुख-सुविधा और भोग-विलास जैसी चीजों को कभी नहीं सराहा गया। अनगिनत दिग्विजयी चक्रवर्ती यहां तक कि देवजयी सम्राट भारत में पैदा हुए। दुनियाभर का उत्तम ऐश्वर्य और भोग-विलास उन्हें सहज-सुलभ रहा फिर भी धार्मिक मर्यादा और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए उन्होंने सर्वस्व तक त्याग दिया। अपनी आराम-तलब जिंदगी को ठुकराकर वन-वन भटकते, भूखे-प्यासे रहने, कष्टों से भरी जिंदगी जीने को उन्होंने श्रेयस्कर माना। हमारा यह धार्मिक-सांस्कृतिक इतिहास बतलाता है- हम सदा से धर्म के दीवाने रहते आये है। हम जानते थे-दुनिया के ऐश्वर्यों में, भोग-विलास में, वह मजा नहीं है जो मजा सादगी, सरलता और सहृदयता से अभिभूत त्याग-संयम से ओत-प्रोत संजीदगी जिंदगी जीने में है। फिर क्या वजह है, हमारे देश के लोग धर्मोन्माद में भरकर पागलों की तरह झूम-झूम कर हिंसा पर उतारु होने लगे हैं।

धर्म क्या है ? इसका लक्षण क्या है ? इसका उद्देश्य क्या है ? धर्म की पहचान क्या है ? यह सब आज के आदमी के लिये अनबूझ पहेली बन चुका है। समाज में धर्म का जो स्वरुप आज दिखाई पड़रहा है, क्या उसे धर्म माना जा सकता है। धार्मिक जगत के अगुआ माने जाने वाले व्यक्तित्व जो आचरण कर रहे है, उसे भी क्या धर्म के अनुरुप स्वीकार किया जा सकता है ? नहीं ? फिर धर्म क्या है ? जो हमारे धर्म शास्त्रों में लिखा पड़ा है, धर्म सिर्फ वही है। यदि यही वास्तविकता है तो सच मानिए जो धर्म सिर्फ पोथियों में पड़ा रह जाता है, उसे दीमक चाट जाती है। हमारे देश में पनपे तमाम धर्मों के बारे में यही सच्चाई है कितने लोग है इस देश में जो अपने धर्म के मार्ग को समझते है, उसकी पहचान जानते है ? हर पदार्थ की जगह जीवात्मा का भी अपना ''स्व-भाव'' है। जब कोई जीव रागद्वेष आदि के वशीभूत होकर ''पर-भाव'' रुप में परिणमन करने लगता है तब वह न केवल ''स्व-भाव'' से दूर हो जाता है वरन उन ''पर-भाव'' परिणामों के अनुसार अपने में कर्म-बंध जुटाने में लग जाता है। इसी कर्म-बंध से वह जन्म-पुनर्जन्म में पड़कर संसारी बनता है, ऐसा संसारी जीव जब धर्म को धारण करता है तब उसका न सिर्फ ''पर-भाव'' रुप परिणमन रुक जाता है, बल्कि उसका आध्यात्मिक उत्थान भी होने लगता है। वस्तुतः सांसारिकता से कर्म-पंक में धसे पड़े दुःखी व्यक्तियों को उठाकर अध्यात्म के निर्मल सुखद उच्चपद पर जो आसीन करा देता है, वह धर्म है।

धर्म की निगाह में कोई अपना-पराया नहीं होता। व्यक्ति की अपनी भावना ही उसमें एक दायरा बना देती है, जिसमें सिमट कर बैठ जाने से उसकी सोच-समझ भी संकीर्ण बन जाती है। यथार्थतः सारी दुनिया में, सारे ब्राह्माण्ड में धर्म एक ही है और वह शाश्वत है। दुनिया के हर देश में वही धर्म ''धर्म'' माना कहा जाएगा जो मानव-मात्र के कल्याण-चिंतन के आधार पर जन्मा होगा और जिसमें आम-आदमी की अधोगति से उठाकर शुभ सद्गति पहुंचाने की सामर्थ्य होगी। धर्म का यही लक्षण है, यही उसकी व्याख्या है, यही उसकी पहचान है।

परमात्मा श्री वासुपूज्यस्वामीजी

श्री वासुपूज्य बारहवें तीर्थंकर हुए। अपने पूर्वभव में वे पुष्करार्द्ध द्वीप के मंगलावर्ती विजय में पद्मोत्तर राजा थे। पद्मोत्तर राजा के भव में उन्होंने निरन्तर जिनशासन की भक्ति की थी। उनके मन में सदा यही विचार रहता कि - लक्ष्मी चंचल है और पुण्यबल नश्वर है। अतः जीवन का वास्तविक ध्येय मोक्ष-पद प्राप्ति होना चाहिये। संयोग से उनका समागम गुरु वज्रनाभ के साथ हुआ। उनके उपदेश से विरक्त होकर राजा पद्मोत्तर नं संयम ग्रहण किया और कठोर तप तथा अर्हद्भक्ति आदि स्थानों की आराधना कर तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन किया। अंतिम समय शुभध्यान में काल कर वे प्राणत स्वर्ग में ऋद्धिमानदेव हुए।

भारत की प्रसिद्ध चम्पानगरी में प्रतापी राजा वसुपूज्य थे, उनकी रानी जयादेवी थी। पद्मोत्तर का जीव देव की आयु पूर्ण होने पर ज्येष्ठ शुक्ला नवमी को शतभिषा नक्षत्र में रानी जयादेवी के गर्भ में उत्पन्न हुआ। रानी ने चौदह महास्वप्न देखे और गर्भकाल पूर्ण होने पर फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी को शतभिषा नक्षत्र में पुत्ररत्न को जन्म दिया। महाराजा वसुपूज्य के पुत्र होने से उनका नाम वासुपूज्य रखा गया।

आचार्य हेमचन्द्र के अनुसार वासुपूज्य अविवाहित माने गये हैं। जिनसेन आदि दिगम्बर परम्परा के आचार्यों का यही मत है। आचार्य हेमचन्द्र के अनुसार राजा वसुपूज्य ने युवराज वासुपूज्य के विवाह योग्य अवस्था प्राप्त होने पर अपनी अभिलाषा व्यक्त करते हुए कहा कि- तुम्हें भी पूर्व तीर्थंकरों के समान, विवाह, राज्य, दीक्षा और तपःसाधना की पूर्व परम्परा का पालन करना चाहिये। वासुपूज्य ने अपने पिता की बात का उत्तर देते हुए कहा कि -उन लोगों के भोगकर्म अवशिष्ट थे, वैसे मेरे भोगकर्म अवशिष्ट नहीं है। भविष्य में भी मल्लिनाथ, नेमिनाथ आदि अविवाहित ही दीक्षित होंगे, अतः मुझे भी अविवाहित ही संयममार्ग ग्रहण करने की अनुमति प्रदान करें। आचार्य हेमचन्द्र के अनुसार माता-पिता ने उनकी बात मान ली और उन्होंने बिना विवाह और राज्यसुख भोगे ही दीक्षा ग्रहण की। वैसे आचार्य शीलांक ने उनके विवाह कर कुछ काल तक राज्य करने के बाद ही दीक्षाग्रहण की बात लिखी है। वास्तव में तीर्थंकर की गृहचर्या भोग्यकर्म के अनुसार ही होती है, अतः उनका विवाहित होना या नहीं होना कोई विशेष अर्थ नहीं रखता। विवाह से तीर्थंकर के तीर्थंकरत्व में कोई बाधा नहीं आती।

आयु के 18 लाख वर्ष पूर्ण होने पर लोकान्तिक देवों के आग्रह पर वासुपूज्य ने वर्षीदान देने के पश्चात छः सौ अन्य राजाओं के साथ चतुर्थभक्त से दीक्षार्थ निष्क्रमण किया तथा फाल्गुन कृष्णा अमावस्या को शतभिषा नक्षत्र में संपूर्ण पापों का त्यागकर श्रमण वृत्ति स्वीकार की। दूसरे दिन महापुर में राजा सुनन्द के यहां परमान्न से प्रथम पारणा किया। देवों ने पंचदिव्य की वर्षा कर पारणे की बड़ी महिमा की। दीक्षा लेकर भगवान वासुपूज्य 1 मास तक छद्मस्थचर्या में विचरण करते रहे और उसी उद्यान में आकर पाटला वृक्ष के नीचे ध्यानावस्थित हुए। शुक्लध्यान के दूसरे चरण में चार घातिकर्मों का क्षयकर माघ शुक्ला द्वितीया को शतभिषा के योग में उन्होंने चतुर्थभक्त से केवलज्ञान की प्राप्ति की। केवली होकर प्रभु ने देव-असुर-मानवों की विशाल सभा में धर्म देशना की तथा क्षान्ति आदि दशविध धर्म का स्वरुप समझाकर चतुर्विध संघ की स्थापना की और भाव-तीर्थंकर कहलाए। विहार करते हुए जब भगवान वासुपूज्य द्वारिका पधारे तो इस काल के दूसरे वासुदेव द्विपृष्ठ उनके आगमन का समाचार सुनकर चरणों में उपस्थित हुए और वीतराग वाणी सुनकर सम्यक्त्व ग्रहण किया। विजय बलदेव भी सभ्यक्त्वी बने और कालान्तर में मुनिधर्म स्वीकार कर विजय शिव-पद को प्राप्त किया।

भगवान वासुपूज्य का भी उस समय के राजघरानों पर व्यापक प्रभाव था। 1 मास कम 54 लाख वर्ष तक केवलीपर्याय में विचरण करके प्रभु ने लाखों लोगों को धर्म-संदेश दिया और अन्त में चम्पानगरी में 600 मुनियों के साथ एक मास का अनशन कर शुक्लध्यान के चतुर्थ चरण से अक्रिय होकर सम्पूर्ण कर्मों का क्षय किया और आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में सिद्ध, बुद्ध एवं मुक्त होकर निर्वाण-पद की प्राप्ति की।

उनके संघ परिवार में 66 गण एवं गणधर, 6000 केवली, 6100 मनःपर्यवज्ञानी, 5400 अवधिज्ञानी, 1200 चौदह पूर्वधारी, 10,000 वैक्रिय लब्धिधारी, 4700 वादी, 72,000 साधु, 1,00,000 साध्वियां, 2,15,000 श्रावक और 4,36,000 श्राविकाएं थी।

संयम जीवन का मार्ग, उपधान तपाराधना

✻ आचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.

संयम जीवन का मार्गदर्शन करनेवाली एक प्रमुख आराधना है उपधान। उपधान करनेवाले को ही हम श्रावकाचार का पालन करनेवाला सुश्रावक कह सकते है। क्योंकि इस तपाराधना को पूर्ण करनेवाले धर्मिष्ठ ही सच्चे मायने में नवकार के साथ चैत्यवंदन के स्त्रोत जपने के अधिकारी होते है। जैनत्व की नित्यप्रति की जानेवाली धर्माराधना में बोले जानेवाले, जपे जानेवाले स्त्रोतों को गिनने का अधिकारी वही होता है तो उपधान तप की आराधना पूर्ण कर लेता है। सारे देश में उपधान चल रहे हैं है , कुछ स्थानों पर तप आरम्भ होनेवाला है। मुबंई में भी 25 अक्टुबंर 3 से उपधान तपाराधना आरम्भ होगी। आप आ रहे है न उपधान करने ? हॉ ? उसके पूर्व उपधान तप की सम्पूर्ण जानकारी इस लेख में प्राप्त कीजिये।

हमारे आगम ग्रंथों में तीर्थंकर परमात्मा ने कहा है कि उपधान तप दुष्कर्मो का नाश करता है। यह संसार सागर धर्म को तराने के लिये नाव के समान है, दुर्वासना को जलाकर उनका नाश करता है और सबसे प्रमुख बात जो है वह यह कि उपधान श्रीवीतराग प्रभु भाषित सूत्रों के अधिकार अर्पण करने में योगदान प्रदान करता है। इसलिये निर्मल ध्यान रुप दीपक समान उपधान तप सदाकरणीय, सेवनीय है।

जिस प्रकार साधु भगवंतों के सूत्र सिद्धांतों की योग्यता प्राप्त करने के लिये योगद्वहान क्रिया करने का तीर्थंकर परमात्मा ने सूत्रों में कहा है उसी प्रकार देववंदन में आनेवाले सूत्रों के लिये श्रावकों को उपधान तपाराधना वहन करने को कहा गया है। उपधान करने के बाद ही नवकार मंत्र से लेकर देववंदन सूत्र बोलने की योग्यता श्रावक-श्राविकाओं को प्राप्त होती है।

उपधान के छः विभागः-

प्रथम उपधान- पंचमंगल महाश्रुत स्कंध (नवकार) दिन 18 है।

द्वितीय उपधान- प्रतिक्रमण श्रुतस्कंध (इरियावही, तस्सउत्तरी) दिन 18।

तृतीय उपधान- शकस्तवा व्ययन (नमुत्थुण) दिन 35।

चौथा उपधान- चैत्य स्तवाध्ययन (अरिहंत चेईयाणां अन्नथ उससिएण) दिन 4।

पांचवा उपधान- नामस्तवाध्ययन (लोगस्स) दिन 28।

छठा उपधान- श्रुत स्तवसिद्धस्तवाध्ययन (पुक्खरवरदी सिद्धाणं बुद्धाणं) दिन 7।

इस तरह संपूर्ण उपधान 110 दिन का होता है, माला का 47 दिन का, 35 दिन का और 28 दिन का इस तरह तीन हिस्से में पूर्ण होता है। तीसरा और पांचवां उपधान बाकी रखकर बाकी के चार उपधान 47 दिन में आराधना माल पहनाने में आती है।

1- उपधान तप में होनेवाली आराधना- श्री उपधान वहन करनेवालों को (1) 47 दिन का पौषध में साधु जीवन का अस्वाद। 21 उपवास, 11 आयंबिल, 15 निवि का तप,

2- एक लाख नवकार मंत्र

3- आठ हजार लोगस्स

4- नव हजार खमासमण।

5- बारह सौ मोटा देववंदन।

6- डेढ़ हजार शक्रस्तव।

7- छः सौ छोटे-मोटे देववन्दन

, जिनसे ज्ञान, उपधान में रखने के वस्त्र उपकरण, पुरुषों के नीचे लिखे वस्त्र उपकरण रखना जरुरी हैः-

1- एक चरवला।

2- दो साल (ठंड में ओढ़ने के लिये)

3- बेटका।

4- एक नाक करने साफ गरम कपड़े का टुकड़ा।

5- दो मुहपत्ति (कोई चार मुहपत्ती रखते है)

6- एक सूत का कंदोरा।

7- एक संथारिया।

8- दो धोती, दो दुपट्टा।

9- नवकार माला।

10-दो धोती ठल्ले मात्रा के लिये।

11-कापी, पेन्सिल, आलोयण लिखने के लिये।

12-कपड़ा सफेद संथारीया पर बिछाने का सूती।

13-कमली गरम ओड़ने लिये।

स्त्रियों को नीचे लिखे वस्त्र रखना जरुरी हैः-

1- एक चोरस डांडी का चरवला।

2- एक कमली गरम ओड़ने के लिये।

3- दो बेटका।

4- दो साल ठंड ओड़ने के लिये।

5- दो मुहपत्ति (कोई चार मुहपत्ति रखते है)

6- नाक साफ करने का गरम कपड़े का टुकड़ा।

7- दो या तीन साड़ी।

8- एक संथारिया।

9- तीन वस्त्र ठल्ले मात्रा जाने के लिये।

10-नवकारवाली।

11- सफेद कपड़ा संथारिया पर बिछाने का सूती।

12-एक कापी, पेन्सिल आलोयण लिखने के लिये।

सभी वस्त्र उपकरण रोज पडीलेहणा करना है इसलिये ज्यादा वस्त्र नहीं रखना चाहिये।

उपधान प्रारंभः–

उपधान वहन करने वाली मुमुक्षु को प्रवेश करने के शुभ दिन सुबह प्रतिक्रमण पडिलेहण और देववंदन करना चाहिये बाद में जिन पूजन दर्शन कर घर आकर तीन नवकार गिनकर क्रिया करने के स्थान पर गुरु भगवंत के पास जाना चाहिये।

नाण के सामने क्रियाः–

चावल– श्रीफल और रुपनाणा लेकर नाण के चारों तरफ एक-एक नवकार प्रभुजी के सामने गिनते हुए तीन प्रदिक्षणा देकर चावल-श्रीफल रुपानाणा आदि प्रभुजी के सामने चढ़ाना चाहिये।

पौधष लेने के उपकरण लेकर पौधष लेना उसके बाद गुरु भगवंत आठ थोय पूर्वक नदी का देववंदन करावे वो एकाग्रचित होकर सभी आराधक क्रिया करें। क्रिया की पूर्ति होने के बाद उपधान तप शुरु हुआ गिनाता है।

आराधकों को दैनिक क्रिया का मार्ग दर्शन क्रिया दर्शन ।

उपधान में प्रवेश करनेवालों को हर रोज नीचे मुताबिक क्रिया करने की होती है।

1- सुबह चार बजे उठकर तीन नवकार गिनकर लघुशंका से निवृत्त होकर स्थापनाजी के सामने इरियावही करना, गमणागमणे करने के बाद कुसुमीण दुसुमणि का काउत्सग्ग विधि पूर्वक करना।

2- उसके बाद प्रतिक्रमण करना उसमें अढ्डाईचेसु सूत्र बोलना, पहले अहोरात्रि का पोषण लेना प्रतिक्रमण पूरा होने के बाद पडिलेहन कर काजा लेकर देववंदन करना।

3- फिर वसति शोधन करके गुरुमहाराज के पास जाना और क्रिया भूमि का काजा लेकर, पवेयणा (प्रवेदन) की क्रिया करना फिर सज्झाय करना, फिर राईय मुहपत्ती करना।

4- फिर 100 खमासमण देकर मंदिर जाकर आठ धुई पूर्वक देव वंदन करना।

5- सूर्योदय होने से छः घड़ी बाद पोरिसी पढ़ानी।

6- नमस्कार महामंत्र की 20 पक्की नवकारवाली गिनना अथवा उसके बदले जीव-विचार, नवतत्व आदि प्रकरणों की 2000 गाथा का स्वाध्याय करना, यहां एक गाथा का प्रमाण एक नवकार बराबर समझना चाहिये।

7- पुरमुड्ढ का समय होवे तब पच्चक्खवाण विधिपूर्वक पारना और एकासणा या आयंबिल का दिन हो तो आहार करके उठने के बाद इरियावही पडिक्कमी जगचिन्तामणी सूत्र से जयवीयराय तक चैत्यवंदन करना, दोपहर को स्वाध्याय करना चाहिये।

8- सायं चार बजे पडिलेहन करने के बाद तीसरी बार देववंदन करके, गुरु महाराज के पास क्रिया करने को जाना, उसके बाद देवसिय प्रतिक्रमण करना। रात्री को गुरु महाराज से आज्ञा लेकर संथारा पोरिसी पढ़ाना और सोते समय कान में रुई लगाना जिसको कुंडल कहते हैं।

दिन पड़ने के कारणः-

सब क्रिया बराबर होना चाहिये और उसमें भूलचूक नहीं होना चाहिये तो सब दिन बराबर गिनने में आते हैं परन्तु जो उसमें अमुक प्रकार की भूलचुक या गलती होती है तो दिन पड़ा हुआ गिनाता है, याने तप तो गिनने में आता है परन्तु पौषध गिनने में आते नहीं है, उससे उतने पौषध पीछे से करना पड़ते है, जो ये पौषध उपधान के साथ साथ हो तो आंतरे उपवास एकासणा कर सकते पर उपधान में से निकलने के बाद करें तो उपवास सहित आठ पहर के ही करना पड़ते हैं ।

1- जो एकासणा, निवी या आयंबिल, करके उठने के बाद या उपवास में कोई समय उल्टी हो तो।

2- झूठा डालने में आवे।

3- पच्चक्खाण पारना भूल जाये।

4- भोजन करने के बाद चैत्यवंदन करना भूल जाये।

5- मंदिरजी जाने के रह जाये।

6- देववंदन करना रह जाये।

7- सायं की क्रिया करने के बाद और सुबह की क्रिया करने के पहले स्थंडिल (बड़ीनीती) जाना पड़े।

8- संथारा पोरिसी पढ़ना रह जाये।

9- मुहपत्ती भुलकर सौ डग या उससे अधिक जाये।

10-मुहपत्ती या दूसरा उपकरण गुम जाये।

11-मक्खा, खटमल, जूं वगैरा त्रस जीव खुद के हाथ से मर जाये।

12- समुदाय में पडिलेहण करी काजो परठय्या बाद कोई अलग पडिलेहण करे तो उसका काजा अलग लेना चाहिये जो नहीं ले तो।

13- स्त्रीयों रीतु धर्म मे हो उतना दिन।

आलोयण आने के कारणः-

उपधान तप में नीचे के कारणों से आलोयण आती है।

1- पडिलेहण किये बिना वस्त्र वापरे।

2- मुहपत्ती और चरवल एक हाथ से दूर रहे के आड़ पड़े।

3- मुह से झूठा निकले।

4- कपड़ा में या शरीर पर से निकले।

5- नवकारवाली गिनते हाथ में से गिर जाये या गुम जाये।

6- रुई का पुमड़ा (कुंडल) कान में नहीं डाले या गुम जाये।

7- पडिलेहण या प्रतिक्रमण करते-करते नवकारवाली गिनते, या खाते-खाते बोले।

8- स्थापनाचार्यजी गिर जाये।

9- काजा में से जीव का कलेवर या सचित्तादि निकले।

10-पुरुष को स्त्री का या स्त्री का पुरुष का संघट्टा होय।

11- दिन में नींद लेवें।

12- दीपक या बिजली का प्रकाश लगे।

13- माथे कामली ओड़ने की काल में कमली ओड़े बिना खुल्ली जगह में जाये।

14- बैठे-बैठे प्रतिक्रमण और खमासमणा दें।

16- उघाड़मुंह बोले।

17- काल के समय माथे कटासणा डालकर जाये।

18- दिन को पोरिसी भणाना रह जाये।

19- मुट्ठिसहियं पच्चक्खाण पारना रह जाये।

20- स्थंडिल या मात्रा करते बोले। ऐसे कारणों से अलोयण आती है इसलिये आराधकों को उपयोग रखना इसके सिवाय दूसरे भी अनेक कारणों से आलोयण आती है वो गुरुगम से जानना।

※ जिन्हें स्वप्न में भी संसार सुख की इच्छा नहीं रही, और जिन्हें संसार का स्वरुप संपूर्ण निःसारभूत लगा है ऐसे ज्ञानी पुरुष भी आत्मावस्था को बारम्बार सम्हाल सम्हाल कर, जो उदय हो उस प्रारब्ध का वेदन करते हैं, परन्तु आत्मावस्था में प्रमाद नहीं होने देते। प्रमाद का अवकाश होने के कारण जिस संसार से ज्ञानी को भी किसी अंश में व्यामोह होने का संभव बताया है, उस संसार में रहकर साधारण जीव अपना व्यवसाय लौकिक भाव से करते हुए आत्महित करना चाहे यह अशक्त-सा कार्य है, क्योंकि लौकिक भाव के कारण जहां आत्मा को निवृत्ति नहीं होती, वहां और किसी रीति से हित-विचार होना संभव नहीं है।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नाम:- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

जैन धर्म और महात्मा गांधी

❋ डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (ग्वालियर)

जगत में जीवन तो सभी जीते है किन्तु वास्तव में जीना उन्हीं का सार्थक होता है जो सर्वाधिक चिन्तन, अनुभूति और सर्वोत्कृष्ट कर्त्तव्य पथ पर कर्म सम्पादन करते हैं। मानव जीवन का मूल्यांकन आयु की दीर्घता, शरीर की स्थूलता केवल धनसंचय एवं संज्ञा के आधार पर नहीं होता है बल्कि उन गुणों अथवा कर्मों के आधार पर होता है जिससे व्यक्ति ने व्यक्तिगत व सामाजिक उत्थान एवं प्रगति में योगदान किया है। ऐसे मानव मानवीय गुणों से परिपूर्ण होकर जीवन जीने वाले महापुरुष की संज्ञा से अभिहित होते हैं, क्योंकि वे अपने जीवन में विचार एवं आचरण में अपने आदर्शों को आत्मसात कर लेते हैं तथा स्वयं अन्य जन के लिए अनुकरणीय एवं प्रेरक हो जाते हैं। इस दृष्टि से स्वाधीन भारत के राष्ट्रीय ज्योतिर्मय इतिहास के उन्नायक एवं युग निर्माता महात्मा गांधीजी का जीवन त्याग और बलिदान का जीवन है, उन्होंने राष्ट्रीय चेतना के साथ ही धार्मिक चेतना को भी आत्मसात कर उजागर किया है। शैशवकाल से ही धार्मिक वातावरण में जैन संस्कृति को निकटस्थ से हष्टत्व का अभूतपूर्व अवसर प्राप्त करने वाले गांधीजी ने भारतीय संतों और विचारकों की सार्वभौम भावना को प्रस्थापित ही नहीं किया बल्कि एकता, सद्भाव, अहिंसा, सहअस्तित्व तथा सामंजस्य की स्थापना करके युद्ध, हिंसा, संहार तथा विनाश के संकटों से मानवता की रक्षा करने का सत्प्रयास किया।

छढ़संकल्पी कथनी करनी के धनी गांधीजी का कहना था कि ''व्यक्तिगत जीवन के पवित्र होने पर ही लोकगत अथवा सामाजिक जीवन पवित्र हो सकता है, क्योंकि जीवन अविभाज्य होता है।'' उन्होंने जैन धर्म, जीवदया को अपनाया तथा रात्रिभोजन त्याग से प्रभावित होकर स्वयं भी रात्रि भोजन का त्याग किया था। इस पर सौ पृष्ठ की पुस्तक भी लिखी। गांधीजी आत्मार्थी गुण ग्राही और जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। उन्होंने स्वयं अपनी डायरी में लिखा है कि - मेरे जीवन पर तीन महापुरुषों ने गहरी छाप डाली है- टालस्टाय, रस्किन और रायन्द्र भाई। रायचन्द्र भाई से तो मेरा प्रगाढ़परिचय था। उनके गंभीर शास्त्र ज्ञान, शुद्ध चारित्र और आत्मदर्शन की उत्कट लगन का प्रभाव मुझ पर पड़...! जो छाप मुझ पर रायचन्द्र भाई ने डाली वह दूसरा कोई नहीं डाल सका...! इसलिये अपनी आध्यात्मिक कठिनाईयों में उनका आश्रय लिया करता था। ''1893 ई. में जब दक्षिण अफ्रीका में ईसाईयों के सम्पर्क में था तब मुझे हिन्दू धर्म पर शकूक (शंका) पैदा होने लगी तो रायचन्द्र भाई से लगभग खत से 27 प्रश्न पूछे उन्होंने मेरे तमाम शकूक दूर कर दी जिससे मुझको अपार शान्ति हासिल हुई.... इसलिये रायचन्द्र भाई में और भी विश्वास बढ़गया।'' रायचन्द्र भाई गुजरात के जैन श्रावक थे जो बाद में संत बने।

महात्मा गांधी का आध्यात्मिक मानस जैन सिद्धांतों से प्रभावित हुए बना नहीं रहा। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पांच व्रत जैन सिद्धांत के माने जाते है। गांधीजी ने पांचों व्रतों का पालन अपने समूचे जीवन में किया और उनके व्यवहारिक उपभोग की प्रक्रिया अपने निस्वार्थ कर्मठ कार्यों के माध्यम से प्रस्तुत की। जीवन के विकास हेतु गांधीजी ने ग्यारह नियम-पांच अहिंसादि, अभय, अस्पृश्यता निवारण, शरीर श्रम, अस्वाद, सर्वधर्म समभाव और स्वदेशी निर्धारित किये थे। ये सभी नियम जैन संस्कृति के सिद्धांतों में सरलता से प्राप्त होते हैं। गांधीजी प्रबुद्ध विचारक, समाज सुधारक एवं राजनीतिज्ञ होते हुए भी धर्माचरण से आत्मकल्याण में संलग्न रहते हुए भारत में स्वतंत्रता का पुनीत दीप प्रज्जवलित किया और मातृभूमि के हाथों से परतन्त्रता की कठोर बेड़ियों को तोड़कर समस्त विश्व में अहिंसा की शक्ति को प्रतिष्ठित किया। ऐसे महान व्यक्तित्व की महानता को शब्दों की परिधि में बांधना संभव नहीं है। गांधीजी का जन्म जयंति के पावन प्रसंग पर भावांजलि अर्पित करते हुए आशा का दीप संजोते है कि सभी संगठित हो एकता के सूत्र में बंधकर महापुरुषों के आदर्शों की ज्योत को जीवन आचरण में धारण कर राष्ट्र समाज धर्म और व्यक्ति की हित रक्षा हेतु दृढ़ संकल्पित हों!

❋ सब क्लेश और सब दुःखों से मुक्त होने का एक आत्मज्ञान को छोड़ दूसरा कोई उपाय नहीं है; बिना सद्विचार के आत्मज्ञान नहीं होता और असत्संग के प्रसंग से जीव का विचारबल स्थगित हो जाता है। इसमें जरा भी संशय नहीं है।

तीर्थंकर और केवली में क्या अंतर है ?

✻साध्वीश्री मुक्ति रेखाश्रीजी म.सा.

1- तीर्थंकर के तीर्थंकर नाम कर्म का उदय होता है, सामान्य केवली के नहीं !

2- तीर्थंकर पूर्व जन्म में दो भव से निश्चित सम्यक दृष्टि होते हैं, केवली के ऐसा नियम नहीं है !

3- तीर्थंकर गर्भ में अवधिज्ञानी होते है, केवली के लिए नियम नहीं !

4- तीर्थंकर की माता 14 स्वप्न देखती है, केवली की माता के लिए जरुरी नहीं !

5- तीर्थंकर पुरुष होते है (तीर्थंकर मल्लि का स्त्री होना आश्चर्य माना गया), केवली स्त्री, पुरुष और कृत नपुंसक सभी हो सकते हैं !

6- तीर्थंकर स्तनपान नहीं करते, जबकि केवली करते हैं !

7- तीर्थंकर दीक्षा से पूर्व नियमित वर्षीदान देते हैं, केवली दे सकते है पर ऐसा नियम नहीं है !

8- तीर्थंकर केवलज्ञान की प्राप्ति से पहले प्रवचन नहीं करते, प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं। सामान्य केवली छद्मस्थ अवस्था में भी उपदेश देते हैं !

9- तीर्थंकर के 5 कल्याणक होते हैं, केवली के नहीं !

10- तीर्थंकर को दीक्षा लेते ही मनःपर्यव् ज्ञान हो जाता है, केवली को नहीं !

11- तीर्थंकर स्वयं बुद्ध होते हैं, केवली के लिए यह नियम नहीं !

12- तीर्थंकर को दीक्षा के पूर्व लोकांतिक देव उद्‌बोधन देते हैं (देवों का जीताचार है), सामान्य केवली के लिए देव नहीं आते !

13- तीर्थंकर चतुर्विध तीर्थ की स्थापना करते हैं, केवली नहीं !

14- तीर्थंकर का शासन चलता है, सामान्य केवली का नहीं !

15- तीर्थंकर के मुख्य शिष्य गणधर होते हैं, केवली के शिष्य गणधर नहीं होते !

16- तीर्थंकर के आठ प्रतिहार्य होते हैं, केवली के नहीं !

17- तीर्थंकर के 34 अतिशय होते हैं, केवली के नहीं !

18- तीर्थंकर की वाणी के 35 विशिष्ट गुण होते हैं, केवली के नहीं !

19- तीर्थंकर भव में 1, 2, 3, 5 और 11 वां गुणस्थान स्पर्श नहीं करते, जबकि केवली 11 वां छोड़, सभी गुणस्थान का स्पर्श कर सकते हैं !

20- तीर्थंकर के केवली-समुद्‌घात नहीं होता, जबकि केवली के होता है !

21- तीर्थंकर का जन्म क्षत्रिय कुल में ही होता है, केवली सभी कुलों से हो सकते हैं !

22- तीर्थंकर के समचतुरस्र संस्थान ही होता है, केवली के छः में से कोई भी हो सकता है !

23- तीर्थंकर का आयुष्य जघन्य 72 वर्ष उत्कृष्ट 84 लाख पूर्व का होता है। सामान्य केवली का आयुष्य जघन्य 9 वर्ष उत्कृष्ट करोड़ पूर्व का होता है !

24- तीर्थंकर की अवगाहना जघन्य 7 हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष की हो सकती है, सामान्य केवली की अवगाहना जघन्य दो हाथ उत्कृष्ट पांच सौ धनुष की होती है !

25- तीर्थंकर मात्र 15 कर्म भूमि में ही होते हैं, केवली संहरण की अपेक्षा सम्पूर्ण अढ़ाई द्वीप में हो सकते हैं !

26- तीर्थंकर स्वयं ही दीक्षा लेते हैं, गुरु से नहीं, केवली स्वयं या गुरु से भी दीक्षा ले सकते हैं !

27- तीर्थंकर तीसरे, चौथे आरे में ही होते हैं, सामान्य केवली सामान्यतः चौथे आरे में और चौथे आरे में जन्मे हुए, पांचवें में भी केवली हो सकते है !

28- दो तीर्थंकर आपस में मिलते नहीं, केवली मिलते हैं !

29- तीर्थंकर जघन्य 20 उत्कृष्ट 170 होते हैं। केवली जघन्य 2 करोड़ उत्कृष्ट 9 करोड़ होते हैं !

30- तीर्थंकर के अर्थ रुपी उपदेश से गणधर द्वाद शांगी की रचना करते हैं, केवली के ऐसा नहीं होता !

31- तीर्थंकर के केवलज्ञान प्राप्ति के बाद, उपसर्ग आते नहीं, केवली के उपसर्ग आ सकते हैं ! (वीर प्रभु को गौशाला का उपसर्ग अच्छेरा)

32- समवसरण की रचना तीर्थंकर के लिए होती है, केवली के लिए नहीं !

33- तीर्थंकर का प्रथम उपदेश खाली नहीं जाता, केवली के ऐसा नियम नहीं ! (वीर प्रभु की पहली देशना खाली जाना अच्छेरा)

34- नरक या देवगति से आये हुए मनुष्य ही तीर्थंकर बनते है, जबकि केवली चारों गति से आकर जन्में हुए बन सकते हैं !

35- तीर्थंकर के वेदनीय कर्म शुभाशुभ, शेष तीन अघाति कर्म, एकान्त शुभ, केवली के आयुष्य कर्म शुभ, शेष तीन शुभाशुभ होते हैं !

36- अभवि तीर्थंकर की सभा में नहीं आता, केवली की सभा में आ सकता है !

37- तीर्थंकर एक क्षेत्र में एक ही होते हैं, केवली अनेक हो सकते हैं ! उपर्युक्त बिंदुओं से हम तीर्थकर और केवली का अंतर स्पष्ट रुप से समझ सकते हैं !!

वर्ग पहेली क्रमांक-*340*

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2	■	3		4		■	5
6		7		■		■	8	
■	9		■	■	10			■
11		■	12		■	■	13	14
	■	15		■	16		■	
17	18	■	19			■	20	
■	21			■	■	22		■
23		■		■	24			25
	■	26				■	27	

बाएं से दाएं:-

1- वीर और अतिवीर भी महावीर के ही--- है (2)
3- लोगस्स सूत्र में 24 तीर्थंकर--- को वंदन किया गया है (4)
6- अठारवें विहरमानजी है श्री---स्वामी (4)
8- किस्मत का समानार्थी शब्द--- (2)
9- अभक्ष्य याने---न नहीं करने योग्य पदार्थ (2)
10-बारह चक्रवर्ती मेंसे एक--- (3)
11-मन के जीते जीत है,--- के हारे हार (2)
12-राजा सिद्धार्थ के तीर्थंकर पुत्र का एक नाम (2)
13-इसका अर्थ होता है अंधेरा--- (2)
15-चने के आकार वाली एक राजस्थानी सब्जी---(2)
16-भ.अजितनाथ के जन्म कल्याणक वाला माह (2)
17-इस तीर्थ में सास-बहू का बनवाया भ.आदिनाथ एवं भ.धर्मनाथजी का मंदिर है (2)
19-अष्टद्रव्य में से एक (3)
20- राष्ट्रगान की पंक्ति है- ''पंजाब---गुजरात मराठा'' (2)
21-अनिश्चितता सूचक शब्द (3)
22-वि---का पर्याय है बिछुड़ना (2)
23-अष्टप्रकारी पूजा का एक द्रव्य (2)
24-पंद्रहवें तीर्थंकर का जन्म स्थल (4)
26-भद्रेश्वर तीर्थ का नजदीकी रेल्वे स्टेशन (4)
27-इसके छूने से लोहा भी सोना हो जाता है-पा---(2)

वर्ग पहेली क्रमांक-339 का परिणाम

क	ल	श	■	वि	ह	र	■	भा
■	क्षम	■	उ	प	रि	■	द्र	व
गा	णी	ती	■	■	भ	ग	व	ती
म्भू	■	स	■	वा	■	■	पु	■
■	प	री	■	न	■	भ	र	त
■	र्यू	■	का	र	क	ल	■	■
ऋ	ष	भा	■	■	पा	वा	पु	री
ष	ण	■	सु	पा	र्श्व	■	ल	■
भ	■	सु	व्र	त	■	का	क	न्दी

ऊपर से नीचे:-

1- चिट्ठी आई है वतन से--- गीत वाली फिल्म (2)
2- आठवें तीर्थंकर के पिता का नाम (4)
3- नौ बलदेव मेंसे एक है---(2)
4- उत्तराधिकारी का पर्याय (3)
5- लायक, उचित का समानार्थी (2)
7- नयसार भगवान महावीर का प्रथम--- था (2)
8- हमारा देश-मेरा--- महान (3)
11-वाल्मिकि रचित रामायण संस्कृत का---व्य है (3)
12-उन्नीसवीं सदी के एक जैन विद्वान जो शिकागो के प्रसिद्ध धर्म-सम्मेलन में जैन-प्रतिनिधि बनकर गये थे (4,2)
14-पाटलीपुत्र कभी इस देश की राजधानी थी (3)
16- भक्तामर स्तोत्र के रचयिता थे श्री--- तुंगाचार्य (2)
18-बीस विहरमानजी मेंसे एक--- प्रभ स्वामी (3)
20- श्रेयांसनाथ भगवान का जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान स्थल---(4)
22- माता त्रिशला को तेरहवें स्वप्न में दिखाई दी थी-- राशि (2)
23- बारहवें तीर्थंकर की माता का नाम (2)
24-वंदे वी--- (2)
25- साहित्य के नौ रसों में से एक है हास्य--- (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-341

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

निम्नलिखित सूत्र कौन सी मुद्रा में बोले जाते है ?

1- पंचिंदिय, 2- वंदीतु, 3- जय वीयराय, 4- वांदणा, 5- आयरिय उवज्झाय, 6- जावंत केवि , 7- जावंति चेइ, 8- नमुत्थुणं, 9- खमासमण।

सत्य कभी कड़्वा नहीं होता....

भाषा बदलते ही व्यक्ति के भाव बदल जाते हैं और भाव बदलते ही व्यक्ति का या तो भव बिगड़ जाता है या भव सुधर जाता है। भाषा उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं जितने भाव महत्वपूर्ण है, इसीलिए श्रीमहावीर कहते है-तुम कहां बैठे हो कैसे बैठे हो ये जरुरी नहीं है, लेकिन तुम किस भावना को लेकर बैठे हो यह जरुरी है, यह महत्वपूर्ण है।

आज सत्य धर्म है और इस सत्य धर्म को मैं वचनों से अपनी भाषा व शब्दों से वर्णन नहीं कर पाउंगा। क्योंकि सत्य आत्मा का विषय है, अनुभव का विषय है। जो कुछ भी मुख से कहा जाएगा वह पूर्ण सत्य नहीं हो सकता है क्योंकि सम्पूर्ण सत्य तो आत्मान्मुखी होता है। लोग कहते है -महाराज सत्य बड़ा कड़्वा होता है, क्योंकि यदि सत्य कड़्वा होता तो राम कभी सत्य को नहीं पीते, फिर श्रीमहावीर कभी सत्य को न पीते, हनुमानजी कभी सत्य को न पीते, सत्य कभी कड़्वा नहीं होता है सत्य तो बड़ा मीठा होता है। लेकिन हाँ ! सत्य हमारे मन को, हमारे दिल को खराब लगता है इसलिये कड़्वा लगता है अरे ! सत्य तो सबसे मीठा, मधुर व अमृत है।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-9-2023 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वर्ग पहेली क्रमांक-340 के परिणाम

विजेताः-

1-भारती जैन, देवास (म.प्र.) -प्रथम

2-सुशीला पगारिया, उज्जैन (म.प्र.)- द्वितीय

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-339 के परिणाम

विजेताः-

1-सुशीला पगारिया, उज्जैन (म.प्र.) -प्रथम

2-भारती जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय

3- सुधा लोढा, उज्जैन (म.प्र.) -तृतीय

सही उत्तर-

1- कालचक्र के, 2- केवलज्ञान, 3- नंदिवर्धन, 4- नरक, 5- कर्मभूमि, 6- मिथिला, 7- लाभांतराय, 8- यशोदा, 9- दान, 10- नवकार मंत्र।

✻ घनघोर वर्षा हो रही थी। गीली मिट्टी टिक नहीं पा रही थी। बांध में हुआ छेद बढ़ता ही जा रहा था। क्या किया जाए, कुछ सुझ नहीं पड़ रहा था। एक आदमी आगे बढ़ा और जहां से बांध टूट रहा था, वहां लेट गया। ठंड के कारण उसका शरीर अकड़ गया तो गांव वालों ने उसे हटाकर उसके स्थान पर दो आदमी लगाए। पहले वाले को आग के पास पहुंचाया। यह क्रम तब तक चलता रहा, जब तक सरकारी कर्मचारी नहीं आ गए और उन्होंने वैकल्पिक व्यवस्था नहीं कर दी। कुछ नहीं होता और कौन करेगा, कहकर शासन को गाली देने वालों को यह देखना चाहिये कि प्रारंभिक क्रम में वे स्वयं क्या कह सकती हैं। शासन के अधिकारियों ने कहा- ''जो काम आपने तत्काल रुप में किया, वह बड़े साहस और तात्कालिक सूझ-बूझ का काम था। जहां ऐसे लोग हों, वहां कोई भी देश का अहित नहीं कर सकता।''

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

!! श्री परमात्माय नमः !!

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1

मो.: 09825414470 / 9820078772

स्थापना वि. सं. 1962

इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744

PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.

ऑफिस फोन : 2387 8476

मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुन्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन

पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन

एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये

कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को

मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको

जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

दान एज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

जतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

युवा जैनाचार्यश्री मुंबई में श्रावकों को श्रमण बनने के लिये श्री महामंत्र का लायसेंस उपधान तप के द्वारा प्रदान करेंगे

जयपुर श्री संघ में चार्तुमास की संभावना है

✻ श्री सम्मेद शिखरजी महातीर्थ के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी महाराज के मूल मंदिरजी जीर्णोद्धार होने के बाद प्रतिष्ठा आपश्री की निश्रा में 21 अप्रेल 2024 को होना निश्चित हुई है।

✻ जैनाचार्य श्री देवचंदसागरसूरीजी की अमृत निश्रा रहेगी।

✻33 उपधान की आराधना करानेवाले जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी का मार्गदर्शन रहेगा। ✻ गुरुकुल के युवा मुनिराज कमान संभालेंगे। ✻ प्रथम मुर्हूत- दिनांक 25 अक्टूबर, द्वितीय प्रवेश मुर्हूत- दिनांक 27 अक्टूबर को, उपधान मालरोपण- दिनांक 13 दिसंबर को ✻ आयोजन- गुरु नवरत्न उपधान तप समिति के द्वारा श्री ठाकुरद्वार जैन संघ श्री चीरा बाजार श्री संघ एवं श्री लोअर परेल श्री संघ के निवेदन पर हो रहा है। ✻ श्री महावीर पंथगामी बनने जा रहे बाल मुमुक्षु तरुण दिलीप जैन 29 नवंबर को दीक्षा ग्रहण करेंगे। ✻ बाल मुमुक्षु श्री उज्जवल जैन 7 दिसंबर को श्री वीर पंथगामी बनेंगे।

✻ मुंबई के 3 श्रीसंघों में गुरु नवरत्न का डंका बज रहा है।✻ मुंबई चार्तुमास के बाद दिसंबर में मेरु महोत्सव में पूना पहुंचने की संभावना इसके बाद उज्जैन आने की संभावना। ✻ कानवन,उज्जैन-इन्दौर में नवनिर्मित होनेवाले जिन मंदिर में प्रभु की प्रतिष्ठा महोत्सव 2024 में हो सकती है।

मुंबई- श्री ठाकुरद्वार जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में प्रवेश के बाद निरंतर प्रभुवीर के शासन को प्रभावमान बनाने के लिये क्रियाशील जैनाचार्य मालवा के आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा अपने प्रभाव पुण्य और पवित्रता से चातुमार्सिक आराधना में यादगार मिसाल बनते जा रहे है। महापर्व की आराधना का पुण्य प्रभाव दिनांक 12 से 19 सितंबर तक दिखाई दिया, अब परमात्मा के शासन को आगे बढ़ाने के लिये 29 नवंबर को तथा 7 दिसंबर को दो बाल मुमुक्षु की दीक्षा के आयोजन से विशाल प्रभावना का नया इतिहास रचा जायेगा। इसके पूर्व दीपावली पर आपश्री सूरी मंत्राराधना में विराजमान होंगे। 16 दिवसीय आराधना मौन और आयंबिल के साथ पूर्ण कर धर्मिष्ठों को नूतन वर्ष की महामांगलिक के द्वारा मंगल वासक्षेप प्रदान करेंगे। उपरोक्त धर्म प्रभावक

कार्यो से मुंबई का यह चातुर्मास यादगार बनने जा रहा है। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग भरपूर जिन शासन की प्रभावना कर मायापुरी में जैनत्व का इतिहास रचने के लिये तत्पर बने हैं। मुंबई के तीन श्री संघों में आपश्री के साथ युवा श्रमण भगवंत अद्भूत शासन भक्ति कर युवा और वरिष्ठ धार्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का झण्डा फहरा रहे है। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा का गुरुकुल श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है। मुंबई के ठाकुरद्वार मलाड़ के राजस्थान संघ तथा लोअर परेल में कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. के चातुर्मास मुंबई में पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल का डंका बज रहा है। श्री वीर प्रभु की पाट परम्परा में अपना योगदान देने के लिये बाल संयमी दिलीप जैन29 नवबंर तथा उज्जवल गुंदेचा का दीक्षा दिवस 7 दिसंबर है। 35 कल्याणक भूमि के अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया कोलकत्ता से अपने ट्रस्ट मंडल के साथ पधारे थे। आपने पूज्यश्री से आग्रह भरी विनंती कि- 2024 में विश्व विख्यात महातीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा के लिये पधारे।

युवा जैनाचार्यश्री की गुरुमंडली का चातुर्मास सम्पन्न होते ही मालवा की ओर प्रस्थान होगा। उज्जैन,इन्दौर में आपश्री के द्वारा जिन मंदिर की प्रतिष्ठा के साथ दिनांक 25 जनवरी को कानवन में श्री विमलनाथ परमात्मा के जीर्णोद्धार किये गये जिनालय की मंगलकारी प्रतिष्ठा गुरु पुष्य अमृत सिद्धियोग में सम्पन्न होगी। इसके बाद आपश्री आदि ठाणा का श्री सम्मेद शिखरजी की ओर मंगल विहार होगा वहां श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाकर आपका विहार राज स्थान जयपुर में चातुर्मास के लिये होगा। लगभग यह कार्यक्रम निश्चित हो चुके है। योगायोग से परिवर्तन की संभावना से इंकार नहीं है। युवा जैनाचार्यश्री अपने गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थ रत्न सागर जी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्जवलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीप.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म.सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्न सागरजी म. सा. मुनिश्री शौर्यरत्न सागर जी म.सा. मुनिश्री ऋषभरत्न सागरजी म.सा .मुनि श्रीसिध्दरत्नसागरजी म. सा.आदि ठाणा युवा शिष्य मंडली के मुबंई के श्रीसंघों में शासन प्रभावना कर रहे है।

✲ विचारवान जीव का यह अवश्य कर्त्तव्य है कि चाहे किसी तरह परभाव के परिचित कार्य से दूर रहना-निवृत्त होना। विचारवान जीव को प्रायः यही बुद्धि रहती है; तथापि किसी प्रारब्ध के वश परभाव का परिचय प्रबलता से उदय हो, उस समय निजपद की बुद्धि में स्थिर रहना विकट है ऐसा मानकर सदा निवृत्त होने की बुद्धि की विशेष भावना करते रहना चाहिए ऐसा महान पुरुषों ने कहा है।

श्री नागेश्वर महातीर्थ में जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी की निश्रा में कण्ठाभरण तप का पारणा हुआ

✲ दिसंबर में मंदसौर में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव होगा।
✲ पौष दशमी आराधना श्री नागेश्वर तीर्थ में करवायेंगे।

नागेश्वर- मांडवगढ़ तीर्थोद्धारक सिद्धचक्र आराधक समाज मार्गदर्शक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा आचार्य देवेश श्री सौम्यचंदसागरसूरीजी म.सा. आचार्य श्री विवेकचंद्रसागरसूरीजी म.सा. प्रर्वतक श्रीधैर्यचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ पूज्य साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी पूज्य साध्वीवर्या श्री चारुधार्माश्रीजी म.सा.पूज्य साध्वीवर्या श्री गिराशुं श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में कण्ठाभरण तप पर संलग्न 16 उपवास की तपस्या का पारणा महोत्सव 24 सितंबर को आयोजित किया गया। तपस्वियों का बहुमान किया गया, पारणा हुआ। मन्दसौर में परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु की अंजन प्रतिष्ठा श्री आर्य दीक्षित सूरी तीर्थधाम मंदसौर में दिसबंर में होगी।

कालधर्म

पालीताना- खारतरगच्छ समुदायवर्तीय साध्वीवर्या श्री विशाल प्रभा श्रीजी म.सा. का कालधर्म पालीताना हरिविहार धर्मशाला में हो गया। आपकी पालकी दिनांक 21 सितंबर को निकली। आपका दीक्षा पुणीय 52 वर्ष था।

कोढ़वा के चार्तुमास में सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में पूना की धर्म फिजा बदल रही है

संयम मेरु महोत्सव में यह आयोजन होंगे मेरु महोत्सव की भव्य तैयारियां चल रही है

✻ 50 हजार धर्मिष्ठ बैठ सकें ऐसा विशाल धर्मसभा मंडप का निर्माण।

✻ चार्तुमास पूर्ण होते ही सैकड़ों साधु-साध्वी मंडल सारे देश से पूना पहुंचेंगे।

✻ 30 आचार्य भगवंत उग्रविहार कर 10 दिनों में पूना पहुंचेंगे। 100ओली का पारणा होगा।

✻ 3 आचार्य पदवी प्रदान की जावेगी।

✻ पूज्य उपाध्याय श्री वैराग्यरत्नसागरजी, पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी एवं पूज्य पंन्यास श्री दिव्यचंद्रसागरजी म.सा. 36 गुण भण्डारी पद पावेंगे।

✻ 14 दिसंबर को पदवी महोत्सव मनेगा, इसके साथ ही उपाध्याय, पंन्यास गणिपदवी भी होगी और मुनि पदवी भी होगी।

✻ 108 सुप्रसिद्ध संगीतकारों द्वारा प्रभु-गुरु भक्ति का रंग बरसेगा।

✻ आगमोद्धारक का नवंबर 2023 अंक संयम मेरुमहोत्सव विशेषांक होगा : संग्रह को संभालकर रखने का ध्यान रखें।

✻ गुजराती में निबंध प्रतियोगिता, पत्र लेखन स्पर्द्धा, ग्रेटिंगकार्ड, स्पर्द्धा और गुजराती सुलेखन स्पर्द्धा : लाखों के ईनाम दिये जायेंगे। यादगार आयोजन में यादगार कार्यक्रम होंगे।

✻ सेना और पुलिस का बहुमान होगा।

✻ कोढ़वा जैन एकता महारैली का आयोजन 10 एवं 12 अगस्त को हुआ। जैन यूनिटी फेस्टिवल के आयोजन में 50 सोसायटी के जैनों का आगमन हुआ।

✻ युवाओं का शानदार शिविर 30 जुलाई को हुआ। जैन एकता का सिंहनाद हुआ।

✻ पूज्यपाद गच्छाधिपति के दर्शन के लिये लाईन लग रही है।

✻ पूना में धर्मचक्र महातप का भव्य शंखनाद 80 दिन का तप की पूर्णाहुति 24 सितंबर को होगी।

✻ मेरु महोत्सव का आयोजन 7 से 18 दिसंबर तक होगा।

✻ संघ हितचिंतक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी के प्रयास की अनुमोदना।

✻ पूज्यपाद संघ स्थविरश्री के चार्तुमास के लिये 10 राज्यों के 130 श्री संघों की विनंती आई। पूज्यपाद संघ स्थविरश्री एवं संघ एकता के आधार शिल्पी सकल संघ हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री का आगामी विक्रम संवत् 2080 वर्ष 2024 का चार्तुमास कहां होगा ? प्रतीक्षा करें।

✻ पूज्यपादश्री की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप, प्रथम प्रवेश 2 नवंबर से आरंभ होगा। उपधान करने पूना पधारे-मालरोपण 20 दिसंबर को होगी।

✻ महामंत्र की मांत्रिक आराधना 25 अगस्त से 2 सितंबर तक हुई। 3 सितंबर को भव्य नवकार रथयात्रा का आयोजन हुआ।

✻ पूज्यपादश्री की निश्रा में बापजी महाराज (पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री सिद्धिसूरीजी महाराजा) की जन्मतिथि पर गुणानुवाद सभा 31 अगस्त को हुई।

✻ गीत लेखन प्रतियोगिता के लिये गीत 9016337427 पर भेजें।

✻ गुरु गुण गौरव गाथा का आयोजन दिल्ली में 9 सितंबर को पूज्यपाद आचार्य श्री रत्नाचल सूरीजी की निश्रा में हुआ।

✻ पूज्यपाद श्री संघ स्थविरश्री की स्केच बनाने की प्रतियोगिता भी हो रही है। लाखों के ईनाम है।

✻ पूना- यहां महापर्व में 1008 अट्ठाई कर धर्मिष्ठों ने अपने तप भाव की दौलत लुटाई।

✻ पूना- धर्मचक्र के 500 तपस्वियों की अनुमोदना में भव्य रथयात्रा 24 सितंबर को निकली, पारणा हुआ। सब आयोजन का मार्गदर्शन सफलहित चिंतक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी का रहा।

पूना- यहां के कोढ़्वा श्री संघ में परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा आदि ठाणा शताधिक संख्या में गुरु भगवंतों, साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में हजारों की जनमोदिनी की उपस्थिति में चार्तुमास प्रवेश यादगार बन गया। यहां के धर्ममय वातावरण को देखकर यह लग रहा है कि इस बार के चार्तुमास ने पूना की फि जा को बदलकर रख दिया है। चार्तुमास धर्म जाग्रति का प्रमाण बन गया है। 85 वर्ष संयम जीवन के पूर्ण होने पर एक वर्ष तक संयम मेरु महोत्सव में 8 हजार 500 जिनशासन प्रभावक कार्यो से वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा ऐसा युग प्रभावक मेरु महोत्सव मनाने की भव्य आयोजन की तैयारी में लगे संघहित चिंतक पूज्य आचार्यदेव श्री हर्षसाग रसूरीजी म.सा. का स्वास्थ्य में अब अच्छा सुधार है सागर समुदाय के साधु भगवंतों के चार्तुमास पूना के विभिन्न संघों में हो रहे है। शताधिक साधु-साध्वी और हजारों की जन मोदिनी की उपस्थिति में धर्ममय वातावरण दिखाई दे रहा है। चार्तुमास आरंभ होते हे कोढ़वा में पोषध धर्म का शुभारंभ होगा इसके साथ ही 80 दिवसीय धर्मचक्र का भी शुभारंभ 5 जुलाई से होकर 24 सितंबर को पूर्णा हुति होगी इसके साथ ही इस बार अधिक मास होने से चार्तुमास 5 माह का है इससे धर्म प्रभावना का जोर है। विविध तप जप के साथ अनेक आयोजन होने की श्रृंखला बनेगी। पूज्य आचार्यश्री नंदीवर्धनसागरसूरीजी वर्तमान में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे है।

आनंद विलास चार्तुमास के आराधक एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान समारोह बंधु बेलड़ीश्री की निश्रा में हुआ

✲उपधान तप करायेंगे

पालीताना- बंधु बेलड़ी आचार्य-द्वेय पूज्यपाद श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी महाराजा, आचार्य देवेश श्री हेमचंद्र सागर सूरीजी महाराजा, आचार्य देवेश श्री विरागचंद्रसागर सूरीजी महाराज आचार्य देवेश श्री लब्धिचंद सागर सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों के अंतर्गत अनेक विशिष्ट आयोजनों से मेवाड़-चैन्नई भवन में धार्माराधना का अच्छा वातावरण बन गया है। यहां चातुमार्सिक आराधना के सभी आराधकों तथा कार्यकर्ताओं को सम्मान समारोह का आयोजन दिनांक 9-10 सितंबर का

मेरु महोत्सव- चार्तुमास उपरांत अतिभव्य रुप से ऐसा परम शासन प्रभावक पूज्यश्री का 85 वां विराट संयमोत्सव मनाया जायेगा। यह आयोजन 7-18 दिसबंर तक मनाया जायेगा कार्यक्रम को अंतिम रुप दे दिया गया है जैनत्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हो ऐसा ऐतिहासिक और भव्य संयम मेरु महोत्सव मनाने के लिये संघ हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के मन में आया और अब वह क्रियान्वित भी होने जा रहा है। पूना के श्री संघ इस संयमोत्सव के लिये जी-जान से जुड़ रहे है और तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित जिन शासन संरक्षण हित की भावना से जाग्रत होकर तैयारी कर रहे हैं।

महापर्व पर्युषण के पूर्व ही किया गया। योग्यता और आराधना का यह समारोह श्री विला सुन्दरम् परिवार के द्वारा किया गया। पूज्यश्री की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप का आयोजन प्रथम प्रवेश दिनांक 25 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत 27 अक्टूबर से आरंभ हो रहा है। श्री अरिहंत मित्र मंडल, मुंबई के द्वारा आयोजित उपधान तप की माल 13 दिसंबर को होगी। 6 अगस्त को सात छट और दो अट्ठम से श्री सिद्धाचल महातीर्थ की सेवा करनेवालों का सम्मान पर रथयात्रा का आयोजन भी हुआ।

कोसेलाव में महापर्व आराधना

कोसेलाव-पाली जिले के फालना के समीप कोसेलाव में महापर्व की आराधना का भव्य आयोजन प्रवासी कोसेलाववासियों के द्वारा किया गया। महापर्व की आराधना के लिये उज्जैन से डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक एवं नाकोड़ा पाठशाला के बच्चे पधारे थे साथ ही निकट समय में दीक्षा लेनेवाले मन्यकभाई का भी पूर्ण सहयोग रहा। कोसेलाव के लगभग 98 प्रतिशत जैन भाई प्रवासी हो गये है, सभी मकानों में ताले लगे है पर फिर भी वे वर्ष में तीन-चार कार्यक्रम अपने गांव आकर कार्यक्रम में भाग लेकर अपनी पुरानी यादों को जीवित रखे हुए है।

पर्व की अनुमोदना में पंचान्हिका महोत्सव श्री चन्द्रप्रभस्वामी श्री संघ में आयोजित हुआ

चारित्र उपकरण वंदनावली और शक्रस्त्रोत महाभिषेक का आयोजन हुआ

उज्जैन- यहां के नयापुरा क्षेत्र में श्री चन्द्रप्रभस्वामी जिन मंदिर परिसर में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री अशोकसागरसूरीजी महाराज के सुशिष्य जैनाचार्य श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी महाराज एवं मुनि श्री श्रुतचंद्र सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में महापर्व की अनुमोदना में पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन दिनांक 20 से 24 सितंबर तक आयोजित किया गया। उज्जैन के चार संघों का सामुहिक पारणा सत्तरभेदी पूजन श्री मणिभद्र तीर्थ की चैत्य परिपाटी एवं 22 सितंबर को भव्य रथयात्रा तथा तपस्वियों का बहुमान किया गया, दिनांक 23 सितंबर को परमात्मा के 18 अभिषेक हुए। दिनांक 24 सितंबर को पूज्यपाद आचार्य देवेश को वंदन तथा यात्रा के लिये श्री संघ ने श्री नागेश्वर तीर्थ की यात्रा की।

जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी की निश्रा में आगम तप पारणा और बच्चों द्वारा अष्ट प्रकार पूजन हुई

मुंबई- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजित आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा., उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्न सागर जी म.सा. पू. मुनिश्री पदमरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा -5 का आदि ठाणा की मंगल निश्रा में यहां हुए आगम तप का पारणा जोरदार रहा। पारणा दिनांक 3 सितंबर को हुआ इसके साथ ही 45 आगम पूजन का आयोजन भी किया गया। साधर्मिक भक्ति भी रखी गई थी। दिनांक 7 सितंबर को श्री संघ के बच्चों के लिये अष्ट प्रकार की पूजन का आयोजन किया गया। सभी बच्चों को विशिष्ट प्रभावना के द्वारा सम्मानित किया गया। साध्वीवर्या श्री रत्नेशकला श्रीजी म.सा. का चार्तुमास भी यहां चल रहा है। भावी आचार्य भगवंत उपाध्याय भगवंत श्री वैराग्यरत्न सागर जी म.सा. की निश्रा में इस चार्तुमास में धर्मिष्ठों को अहो जिनशासनम् का भाव म न में आ रहा है ठाकुर विलेज में 10 सितंबर को श्री नेमिनाथ प्रभु के पंच कल्याणक की प्रस्तुति तथा जीवन चारित्र पर नेमी परायण नाम से कार्यक्रम हुआ।

दीक्षा मुर्हूत मासक्षमण की पूर्णाहुति

मुंबई- आनन्द नगरी तारदेवी में बिराजित सौधर्म बृहत्तपा गच्छाधिपति प.पू.आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयानन्द सूरीश्वरजी म.सा. के 47 वें दीक्षा दिवस के अवसर पर आयोजित विशाल गुणानुवाद सभा में हजारों की जनमेदिनी की उपस्थिति में तीन मुमुक्षुओं 1- मोक्षकुमार अशोकजी बोहरा (बागोड़-मुंबई), 2- कु. आंचल जितेन्द्रजी नागोरी (आहोर-बैंगलोर), 3- कु. आदित्ति मुकेशजी रांका (धुम्बड़िया-बैंगलोर) को दीक्षा मुर्हूत प्रदान किया गया।

तीनों मुमुक्षुओं की दीक्षा पू. गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में मार्गशीर्ष वद-2 (गुजराती-कार्तिक वद 2) गुरुवार दिनांक 29-11-2023 को मुंबई में सम्पन्न होगी। यहां पर पूज्यश्री की निश्रा में 470 सिद्धितप, 24 मासक्षमण एवं अनेकों 16 उपवास व अट्ठाई की तपस्या के पारणे रिचार्डसन एण्ड क्रुडस-भायकला के विशाल मंडप में 27 अगस्त को सानंद सम्पन्न हुए जिसमें बीस हजार से अधिक अनुमोदनार्थ पधारे, श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। पारणा व स्वामी वात्सल्य का लाभ संघवी कांतिलालजी चुन्नीलालजी परिवार धानसा/मुंबई ने लिया।

आगामी चार्तुमास की जय बोलाई गई

मुंबई- यहां के विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ की आग्रहभरी विनंती पर पूज्य आचार्य देवेश श्री अक्षयबोधि सूरीजी तथा आचार्यदेव श्री महा बोधि सूरीजी महाराज का आगामी वि.सं. 2080 ईस्वी सन् 2024 का चार्तुमास विलेपार्ले श्री संघ में करेंगे। संघ में चार्तुमास की घोषणा से हर्ष छा गया।

100 ओली पारणा में आत्मीय मैत्रीता के दर्शन हुए

✻साध्वीवर्या श्री मैत्रीदर्शना श्रीजी म.सा. को ओली पारणा पर 11 दिवसीय आयोजन हुआ।

उज्जैन- श्री वर्धमान तपारि-धिका साध्वीवर्या श्री मैत्रीदर्शना श्रीजी म.सा. के 100 वीं ओली का तप पारणा महोत्सव आचार्य श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी म.सा., मुनिश्री श्रुतचंदसागरजी म.सा., साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा एवं श्री हीर सूरीश्वरजी बड़ा उपाश्रय में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित साध्वीवर्या श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीवर्या श्री सम्यग्दर्शना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में 11 दिवसीय महोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ। श्री हीर सूरीश्वरजी बड़ा उपाश्रय में पारणा आयोजन दिनांक 22 सितंबर से 2 अक्टूबर तक हुआ। पारणा प्रसंग पर चारित्र वंदनावली का आयोजन श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर साध्वी श्री सौम्यवंदना श्रीजी की प्रेरणा से हुआ। श्री नव्वांणु प्रकार पूजन, बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजन, श्री गिरनार की भावयात्रा हुई। आचार्यश्री के प्रवेश के साथ जगतगुरु श्री हीरसूरीश्वरजी महाराज की 428 वीं पुण्यतिथि पर गुणानुवाद सभा उजमणा आयोजित किया गया। श्री आदिनाथ पंच कल्याणक पूजन, 27 जोड़ों के साथ श्री सिद्धचक्र महापूजन, श्री पद्मावती महापूजन और श्री मणिभद्र दादा का हवन पूजन, श्री वर्धमान शक्रस्तव तथा साध्वी मैत्रीदर्शना श्रीजी म.सा. के जीवन के बारे में नाटिका, लघुशांति स्नात्र पूजन, कुमारपालजी की आरती पारणा के एक दिन पूर्व भव्य रथयात्रा निकाली गई। इसके बाद सकल श्री संघ का स्वामी वात्सल्य हुआ। पारणा 2 अक्टूबर को अरविंद नगर में हुआ।

100 वर्धमान तप पाया और 200 अट्ठाई पर भव्य शोभायात्रा निकली

रतलाम- श्री देवसूर तपागच्छ चारथुई जैन श्री संघ गुजराती उपाश्रय में विराजित पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विजयकुलबोधि सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 23 सितंबर को यहां पूज्यश्री की निश्रा में वर्धमान तप ओली का पाया डालनेवाले 100 से अधिक पायावालों और 200 अट्ठाई की तपस्या करनेवाले आराधकों की भव्य शोभायात्रा आयोजित की गई, बाद में भव्य धर्मसभा में सभी तपस्वियों का सम्मान किया गया।

श्री अंतरिक्ष तीर्थ में अट्ठम तपाराधना

अंतरिक्ष तीर्थ- पूज्य जैनाचार्य श्री अजितशेखरसूरीजी म.सा. एवं विमलबोधिसूरीजी म.सा. की प्रेरणा से यहां पौष दशमी पर अट्ठम तपाराधना 5 से 7 जनवरी तक होगी। यह आयोजन पूना से अर्हत् ग्रुप के द्वारा आने जाने वाले श्रावक के साथ होगा।

5000 आयंबिल की आराधना

चैन्नई- श्रीमद् आचार्यदेव जगतगुरु श्री हीरसूरीश्वरजी म.सा. की 427 वीं पुण्यतिथि तथा श्री आचार्य श्री पद्मसागरसूरीजी म.सा. के 89 वें जन्मदिन पर चैन्नई में 5000 आयंबिल तपाराधना भव्य गुरु समपर्णोत्सव के रुप में 15 सितंबर को मनाई गई।

श्री महाराजाधिराज का महाभिषेक

मुंबई- श्री लब्धिनिधान श्री शांतिनाथ जैन संघ मलाड़ (ईस्ट) में पूज्य मुनिश्री युगंधरविजयजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यहां महाप्रभावक श्री शक्रस्तव स्तोत्र के साथ महाराजाधिराज परमात्मा का महाभिषेक का आयोजन किया गया। दिनांक 3 सितंबर को इस आयोजन में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने लाभ लिया।

52 वीं ओली पारणा सम्पन्न हुआ

अहमदाबाद- श्री शामला पार्श्वनाथ जिनालय पावापुरी घाटलोड़िया श्री संघ में पूज्य साध्वीवर्या श्री विरागरसा श्रीजी म.सा. को 52 वर्धमान ओली पारणा प्रसंग पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 1 से 3 सितंबर तक हुए आयोजन में समूह सामायिक श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी के जाप तथा श्री गुरुगौतम स्वामी महापूजन, तपस्वी को बधाया गया। पूज्य साध्वीश्रीजी के संसारी परिवार ने लाभ लिया।

✻ विचारवान को पुद्गल में तन्मयता-तादात्म्य भाव नहीं होता। जिसे तन्मयता होती है उसे ही हर्ष-शोक होता है। निमित्त जो है वह अपना कार्य किये बिना नहीं रहता।

अहो जिनशासनम् चातुर्मास में गणिवर्यश्री की निश्रा में मंदिरजी का विराट श्रृंगार हुआ

इन्दौर-पूज्य गणिवर्य श्री आनंद सागरजी महाराज, मुनि श्री ऋषभचंद्र सागरजी म.सा. आदि ठाणा-8 के एवं साध्वी श्री सौम्ययशा श्रीजी म.सा.एवं साध्वीवर्या श्री शीलरेखाश्रीजी म.सा. साध्वी वर्या श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की निश्रा में यहां पूज्यश्री के द्वारा प्रेरित वार्षिक कर्त्तव्य की मूर्ति स्वरुप इन्दौर श्री आदिनाथ जी, शांतिनाथजी एवं श्री अजितनाथ जी, श्री नेमिनाथजी के सफेद लाल मंदिरजी का विराट श्रृंगार किया गया। यह आयोजन दिनांक 14 सितम्बर को भव्य रुप से सम्पन्न हुआ। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने दर्शन वंदन का लाभ लिया। श्री नवकार परिवार के द्वारा आयोजित मंदिर श्रृंगार के लाभार्थी श्री कांतिलाल अक्षय बम परिवार थे। अहो जिनशासनम् चातुर्मास में गणिवर्यश्री इन्दौर के युवाओं में धर्म जाग्रति का शंखनाद कर रहे है। प्रवचन में लगभग 500 धर्मिष्ठों का आगमन हो रहा है। 10 सितंबर को गणिवर्यश्री के सेमलिया तीर्थाधिपति श्री शांतिनाथ दायर की भाव यात्रा, संगीत के साथ करवाई, प्रभावना का लाभ श्री मनोहरलाल जैन ने लिया।

पुत्र ने 5 वर्ष पूर्व फरारी कार में दीक्षा मुर्हूत लिया था अब माता-पिता जेगुआर कार में दीक्षा मुर्हूत लिया

सूरत-चार्तुमास की पूर्णाहुति होते ही दीक्षा ग्रहण करने के मंगल मुर्हूत का शुभारंभ हो जायेगा। चार्तुमास विराजित गुरु भगवंतों से आनेवाले दिनों में दीक्षा लेने, दीक्षा देने जैसे अनेक कार्यक्रमों का निर्धारण हो जायेगा। चार्तुमास पूर्ण होते ही फिर दीक्षा के कार्यक्रमों से श्री संघ में संयम का रंग चढ़ेगा। विगत दिनों यहां श्री उमरा जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में पूज्यपाद दीक्षा-दानेश्वरी आ. श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के अजीवन चरणोपासक आचार्य श्री रश्मि रत्नसूरीश्वरजी महाराज, पंन्यास हर्ष-जित-सौम्यांग दीक्षितरत्न विजय जी म.सा. , गणिवर्य गौतम-सुधर्म-यश - त्रिभुवनरत्न विजयजी आदि 48 साधु भगवंतों एवं प्रवर्तिनी साध्वी श्री पुण्यरेखा श्रीजी म.सा. के शिष्या विदुषी सा.श्री मनीष रेखा श्रीजी. सा.श्री मनोज्ञ रेखा श्रीजी और सा. श्री विशुद्धरेखा श्रीजी म. सा. आदि 28 साध्वीजी भगवंतों की अमृत निश्रा में हीरा व्यापारी दीपेशभाई एवं उनकी धर्मपत्नी शोभायात्रा के साथ जेगुआर कार में अपना दीक्षा मुर्हूत लेने पहुंचे, यह स्मरणीय है कि पांच वर्ष पूर्व उनके सुपुत्र भव्यशाह फरारी कार में दीक्षा मुर्हूत लेने आये थे। हीरा व्यापार दीपेश भाई के पिता श्री प्रवीणभाई वर्षों पहले बेलगांव से सूरत रहने आये थे। 10 वर्ष पूर्व दीपेशभाई के पुत्र ने 12 वर्ष की आयु में दीक्षा लेकर साध्वी परार्थ रेखा नामा पाया था और पांच वर्ष पूर्व इनके पुत्र भव्य शाह ने भी दीक्षा ग्रहण कर मुनि श्री भाग्यरत्नविजयजी नाम पाया था। अब माता-पिता दीक्षित होने जा रहे है। चार्तुमास बाद दीक्षा महोत्सव का आयोजन होगा।

अगाशी तीर्थ में उपधान तप

अगाशी- परम परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रभु से महिमा मंडित श्री अगाशी तीर्थ विरार (वेस्ट) में उपधान तप होने जा रहा है। राजग्रही तीर्थ प्रेरक आचार्य देवेश श्री अक्षयचन्द्र सागरसूरीजी म.सा., पूज्य प्रर्वतक श्री नयशेखरसागरजी म.सा. एवं साध्वी-वर्या श्री भव्यज्ञाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में प्रथम मुर्हूत दिनांक 20 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत 21 दिसंबर से उपधान का शुभारंभ होगा। उपधान तप का मालारोपण दिनांक 8 फरवरी 2024 को होगा।

मुनिश्री विशुद्धरत्नसागरजी म.सा. नेपाल में चार्तुमास

काठमांडु- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यदेवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल के रत्न मुनिश्री विशुद्धरत्न सागरजी एवं मुनिश्री समकितरत्न सागर जी म.सा. हिमालय की यात्रा पर है, नाम के अनुरुप शुद्ध सात्विक चारित्र का पालन करने वाले मुनिश्री एकांत में रहते हुए साधना करते रहे है, मोबाईल आदि से सम्पर्क से दूर रहने वाले मुनिश्री की हिमालय के दुर्गम पर्वतों पर आराधना की है। मुनिश्री विशुद्ध रत्नसागरजी म.सा.एवं मुनिश्री समकित रत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास नेपाल काठमांडु में हो रहा है।

✻ सब जीव आत्मरुप से सम-स्वभावी है। दूसरे पदार्थ में यदि जीव निज-बुद्धि करें तो परिभ्रमण दशा को पाता है और यदि निज में निज-बुद्धि करें तो परिभ्रमण दशा टलती है।

आचन्टा तीर्थ में नवपदओली आराधना एवं अठारिया उपधान तप का आयोजन

आचन्टा- आंध्रप्रदेश के जैन तीर्थ में श्री नवपद ओली आराधना तथा अठारिया उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य आचार्यदेवश्री नयचंद्र सागरसूरीजी महाराज के सुशिष्य शतावधानी पूज्यश्री अभिनंदन सागरजी म.सा.आदि ठाणा-5 तथा साध्वीश्री अमिरसा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा रहेगी। नवपद ओली आराधना 20 से 29 अक्टूबर तक होगी तथा अठारिया का आयोजन 24 अक्टूबर से 11 नवंबर तक होगा। अठारिया आराधना से धर्मिष्ठों को महामंत्र गिनने की परमिशन लायसेंस मिल जाता है।

श्री पार्श्वनाथ प्रभु की 18 प्रतिमाओं को श्री पार्श्वपुरम् तीर्थ में विराजमान की उछामणी हुई

मुंबई- श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ जैन श्री संघ बाबुलनाथ में पूज्य आचार्य भगवंत श्री सागरचंदसागरसूरीजी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां दिनांक 3 सितंबर को पूज्यश्री की निश्रा में नवनिर्मित हो रहे श्री कोंकण पार्श्वपुरम् तीर्थ में विराजित होनेवाली श्री पार्श्वनाथ प्रभु की 18 प्रतिमा की उछामणी हुई। 21 तथा 17 इंच की प्रतिमा के लिये नकरा 15 एवं 18 लाख रुपये था। प्रतिमा का लाभ लेनेवाले को प्रतिष्ठा, शिलास्थापना तथा सम्पूर्ण देहरी और कायमी ध्वजा का लाभ भी दिया गया है। नकरे की राशि का 10 प्रतिशत साधारण की पूर्ति के लिये अलग से प्रावधान किया गया था जो लाभार्थी को देना था।

22 आचार्य 150 साधु 800 साध्वी और हजारों धर्मिष्ठों की जनमेदिनी के बीच गिरिराज को बधाया गया

पालीताना- श्री सिद्धाय महातीर्थ में दिनांक 4 सितंबर को एक अद्भूत नजारा देखने को मिला जब यहां पर गिरिराज को बधाने के लिये पालीताना में विराजित सभी समुदाय के गुरु भगवंत, साधु-साध्वीजी एक मंच पर एकत्रित हुए, हजारों की जनमेदिनी की उपस्थिति में प्रातः 5.30 से 8 बजे तक गिरिराज को बधाया गया। चार्तुमास करवानेवाले 8 परिवारों की ओर यह आयोजन हुआ। श्री नवरत्नधाम पर सामुहिक रुप से एकत्र सभी साधु-साध्वी सामैय्या के साथ पारणा भवन पहुंचे। यहां सुधर्मा पर 11 समुदाय के 22 आचार्य, 150 साधु, 800 साध्वीजी तथा लगभग 7000 से ऊपर धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही। यह दृश्य देखने के लिये पालीताना में बहुत उत्साह और उमंग था। पूज्य आचार्यदेव श्री यशोभद्रसूरीजी, श्री सोमसुन्दर सूरीजी, श्री बंधुबेलड़ी आचार्य श्री जिनचंदसागरसूरीजी, श्री धर्मध्वज सूरीजी, श्री श्रेयांसप्रभ सूरीजी, श्री राजचंद्रसूरीजी आदि की पावन निश्रा रही।

चैन्नई में सिद्धितप पारणा सम्पन्न

चैन्नई- यहां के उपनगर वेपेरी में विराजित गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री विज्ञानप्रभसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में सिद्धितप पारणा महोत्सव 3 से 6 सितम्बर तक आयोजित हुआ। दिनांक 4 सितम्बर को पू. आचार्य देवश्री केशरसूरीजी महाराज की गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। सिद्धि तपाराधाकों की शोभायात्रा 5 सितम्बर को निकली। पारणा 6 सितम्बर को सम्पन्न हुआ।

चौविहार छट की सात यात्रा जनवरी में

सूरत- गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री राजशेखार सूरीश्वरजी महाराज तथा आचार्य देवेश श्री रत्नाकरसूरीजी महाराज की निश्रा में श्री शत्रुंजय महातीर्थ की चौविहार छट कर सात यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। श्री नमो नमः शाश्वत परिवार के द्वारा आयोजित यात्रा का प्रयाण दिनांक 10 जनवरी 2024 को उजमणा से होगा। सवेतना तथा उत्तर पारणा दिनांक 11 जनवरी 2024 को तथा शुभयात्रा 12-13 जनवरी को होगी। 14 जनवरी को पारणा के साथ यात्रा का समापन होगा।

बेटमा में बच्चों का शिविर लगा

बेटमा- पूज्य साध्वीवर्या श्री स्वर्णज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-3 की निश्रा में यहां दिनांक 3 सितंबर को 10 से 25 वर्ष तक के बच्चों के लिये रविवारीय शिविर का आयोजन ''मेरा जिन शासन महान'' विषय पर किया गया।

गणिवर्यश्री की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान का प्रथम मुर्हूत 25 अक्टूबर को

भवानीमंडी- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.गणिवर्य श्री अक्षतरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा में में श्रावक जीवन को श्रमणत्व का स्वाद चखानेवाली आराधना उपधान तप का शुभारंभ 25 अक्टूबर को प्रथम मुर्हूत के साथ होगा। द्वितीय मुर्हूत 27 अक्टूबर को है। 18 वर्ष के बाल आराधकों के लिये अठारिया का आयोजन हो रहा है। गुरु नवरत्न उपधान समिति की व्यवस्था में उपधान तप होगा। चार्तुमास में विविध धार्मिक अनुष्ठान तप,जप के साथ संयम की उद्घोषणा से अध्यात्म के रंग में रंग गया है। दिनांक 16 सितबंर को महामांगलिक आयोजन हुआ बांजना निवासी पूजा बाफना को पूज्य गणिवर्यश्री ने संयम मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये दीक्षा का मुर्हूत **दिनांक 14फरवरी** प्रदान किया **है गणिवर्य श्री आदर्श रत्नसागरजी म.सा. की निश्रा में दीक्षा बांजना में होगी।**

मुनिपुंग श्री पद्मकीर्तिसागरजी को 99 वीं ओली पारणा पर108 आयंबिल की आराधना हुई

पूना- आराधना भवन लेक टाउन सिटी में चार्तुमास के लिये विराजित सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य पूज्यपाद वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा एवं आयंबिल तपाराधक मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 3 सितंबर को श्री सिद्धाचल महातीर्थ की भावयात्रा तथा 108 आयंबिल तप की सामूहिक आराधना का आयोजन किया गया।पूजयश्री निश्रा में मुनिपुंग वैय्यावच्च प्रेमी श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 99 वीं ओलीजी की पूर्णाहुति भादवा सुदी-10 दिनांक 24 सितंबर को हुई। पारणा महोत्सव आयोजित किया गया।पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. क100 वी ओली जी का पारणा गृहनगर मे होने की संभावना है। पूज्य साध्वीवर्या श्री भव्यज्ञानीश्री को एकासणा तथा साध्वी श्री मृदुदर्शिता श्रीजी को 68-69 वीं वर्धमान तप ओली चल रही है। साध्वी श्री नंदीप्रिया श्रीजी एवं साध्वी श्री निधिक्रिया श्रीजी को धर्मचक्र तप चल रहा है।

आचार्यश्री हंसरत्नसूरीजी महाभद्र तप कर रहे है

मुंबई- यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित महातपस्वी आचार्य भगवंत श्री हंसरत्नसूरीश्वरजी महाराजा जिन्होंने पूर्व में 18 उपवास किये थे अब आपश्री महाभद्र तप की आराधना का शुभारंभ दिनांक 25 जुलाई से करेंगे। महाभद्र तप की प्रथमबारी की शुरुवात होगी। इस महोत्सव में कुल 245 दिवस 196 उपवास और 99 बियासणा आयेंगे। पहली बारी में 28 उपवास तथा सात बियासणे आयेंगे। यह आराधना 35 दिन की रहेगी।

जोधपुर में भव्य रथ यात्रा का आयोजन हुआ

जोधपुर- श्री नंदनवन जैन श्वेतांबर श्री संघ में चार्तुमास हेतु विराजित साध्वीवर्या श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी और बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी की निश्रा में बाल शिविर के आयोजन के साथ दिनांक 24 सितंबर को भव्य रथयात्रा आयोजित की गई। बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्नाश्रीजी ने प्रथम बार अट्ठम तप किया। चार्तुमास के बाद आपका विहार जैसलमेर की ओर होने की संभावना है। लौद्रवाल में पौष दशमी आराधना करवायेंगे। आपका आगामी चार्तुमास इसी क्षेत्र में होने की संभावना है।

श्री गोटीवाला संघ में रथयात्रा तथा चैत्य परिपाटी

पूना- श्री गोटीवाला ओसवाल जैन संघ में विराजित आचार्य देवेश श्री राजरत्नसूरीजी म.सा. (भगवान महाराज) आदि ठाणा-3 की अमृत निश्रा में दिनांक 21 सितंबर को श्री गोटीवाला ओसवाल जैन श्री संघ में से 11 कर्त्तव्य स्वरुप रथयात्रा एवं चैत्य परिपाटी का आयोजन किया गया। विभिन्न जिन मंदिर के दर्शन वंदन के उपरांत रथयात्रा-चैत्य परिपाटी श्री नाकोड़ा भैरव भवन पहुंची। यहां संघ की नवकारसी हुई।

✲ *विचारवान के चित्त में यह विचार निश्चय रुप से रहा करता है कि- संसार काराग्रह है, समस्त लोक दुःख के कारण पीड़ित है, भय के कारण आकुल-व्याकुल है और राग-द्वेष के प्राप्त फल से प्रज्वलित है।*

हमें जीवन को तपोमय बनाना चाहिये- आचार्यश्री

❋ जैनाचार्यश्रीसौम्यचन्द्रसागरसूरीजी म.सा.का 16 उपवास पर पारणा।

नागेश्वर- तपस्या जीवन का सार तत्व है, रात्रि भोजन महापाप है, हमें इस लोक एवं परलोक को सुधारने के लिये जीवन में तपस्या, गुरु आज्ञा अथवा संयम तथा नियम का पालन अवश्य करना चाहिये।

नागेश्वर तीर्थ उन्हेल के मार्गदर्शक आचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी म.सा. ने कार्यदक्ष आचार्य सौम्यचन्द्रसागर म.सा. के 16 उपवास के समापन एवं पारणा प्रसंग पर आयोजित धर्मसभा में आचार्यश्री ने कहा कि सौम्यचन्द्रसागर सूरी ने दस वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर गुरु आज्ञा अनुसार ज्ञान, ध्यान एवं तप में आगे बढ़ना ही अपने जीवन का परम लक्ष्य बनाया जो कि महत्वपूर्ण एवं अनुमोदनीय है। इस अवसर पर आचार्य विवेकचन्द्रसागर महाराज ने कहा कि काया को कष्ट देकर तप का पालन कठिन है। प्रवर्तक मुनिराज धैर्यचन्द्र सागर महाराज ने भी धर्मसभा को संबोधित किया।

कार्यक्रम के दौरान आचार्यश्री ने यहां विराजित साध्वी चारुधर्माश्री, दमिताश्रीजी एवं साध्वी गिरांशुश्री महाराज आदि ठाणा सहित चर्तुविध संघ के साथ प्रातःकाल सीताबाई दीपचंद जैन, केसरबाई शंकरलाल जैन एवं रमेशचन्द कोठारी परिवार के यहां प्रातःकाल बैण्डबाजों के साथ पधारकर पगलिया किये। तपस्या निमित्त भगवान श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ की भव्य अंगरचना कर दोपहर में मंदिरजी में पूजन पढ़ाई गई।

अभय अमृत छःरिपालित संघ यात्रा तपागच्छीय समिति के कार्यवाहकश्री की निश्रा में निकलेगी

राधनपुर- तपागच्छीय प्रवर समिति के कार्यवाह पूज्य आचार्यदेवेश श्री अभयदेवसूरीजी महाराजा, आचार्य देवश्री मोक्षरत्नसूरीजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में राधनपुर से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ का छःरिपालित संघ यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। संघ राधनपुर से 29-12-2023 को संघयात्रा प्रस्थान होगी तथा दादा के दरबार में संघ मालारोपण दिनांक 3 जनवरी 2024 को होगी।

प्रर्वतक प्रदान किया जायेगा

चैन्नई- श्री वेपरी श्री संघ में पूज्य आचार्य देवेश श्री विज्ञानप्रभ सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विजयहेमप्रभ सूरीश्वरजी महाराज के सुशिष्य मुनिश्री बोधिप्रभविजयजी म.सा.को प्रर्वतक पद प्रदान किया जायेगा। पद दिनांक 7 दिसंबर को क्रिया विधि के साथ प्रदान होगा।

विरति उपधान तप का आयोजन

पालीताना- पूज्य आचार्यदेव श्री ललितप्रभसूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम मुर्हूत दिनांक 29 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत 31 दिसंबर को होगा। उपधान तप का मालारोपण उत्सव दिनांक 16 फरवरी 24 को मनाया जायेगा। उपधान का आयोजन श्री पन्नारुपा धर्मशाला में होगा।

आगामी चार्तुमास

औरंगाबाद- यहां चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य मुनिश्री हंसबोधि विजयजी म.सा. का तथा तपस्वी श्री भद्रकीर्तिविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद के शांतिनगर जैन संघ उस्मानपुरा में घोषित हुआ है। पूज्य पंन्यास श्री मनोभूषणविजयजी म.सा. का चार्तुमास भी यहीं होगा।

गोटीवाला संघ में उपधान

पूना- पूज्य आचार्य देवेश श्री राजरत्नसूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में श्री गोटीवाला ओसवाल जैन संघ के तत्वावधान में श्रावक से श्रमण बनने की तपाराधना उपधान का आयोजन दिनांक 30 नवंबर को उत्तर पारणा तथा प्रथम प्रवेश दिनांक 1 दिसंबर से होने जा रहा है। द्वितीय प्रवेश दिनांक 3 दिसंबर को होगा।

लुणावाडा में उपधान तप

लुणावरड़ा- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री आगमचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा-10 की निश्रा में यहां उपधान तप का शुभारंभ प्रथम मुर्हूत दिनांक 25-10-2023 से हो रहा है। द्वितीय मुर्हूत 27-10-2023 को है। उपधान तप मालारोपण विधि 14-12-2023 को सम्पन्न होगी।

351 सिद्धि तप का पारणा हुआ

अहमदाबाद- श्री गौतमस्वामी जैन संघ वासणा में पूज्य आचार्य देवेश श्री विजयकुलचंद सूरीश्वरजी (केसी) महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां हुए 351 सिद्धि तप का पारणा महोत्सव सम्पन्न हुआ। दिनांक 3 सितंबर सभी तपस्वियों का पारणा करवाने का लाभ गांधी परिवार ने लिया।

मालवा के जैनाचार्यश्री की निश्रा में संयम उपकरण वंदनावली हुई

✻ मुनिपुंग श्री चैत्यरत्नसागरजी को 49 वां वर्धमान ओली पूर्ण हुई।

पूना- वर्धमान नगर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी महाराज मुनिश्रीचैत्यरत्नसागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्र रत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां पूज्यश्री की निश्रा में दिनांक 3 सितंबर को संयम उपकरण वंदनावली का गीत संगीत के साथ भव्य आयोजन किया गया। वैराग्य की भावना को पृष्ट करनेवाले इस आयोजन में लगभग 400 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। सार्धमिक भक्ति भी रखी गई थी। पूज्य साध्वी श्री दिव्ययशा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास यहां चल रहा है। मारवाड़ी क्षेत्र के धर्मिष्ठों को हिन्दी भाषा में प्रवचन गले उतर रहे है। पूज्य युवा मुनि भगवंत श्री चैत्यरत्नसागरजी म.सा. को विगत दिनों वर्धमान तप की 49 वीं ओली की पूर्णाहुति पर अनुमोदना सभा का आयोजन किया गया। आयंबिल आराधक पूज्य आचार्य देवेश श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज पूज्यपाद गच्छाधिपति की सेवा में निरंतर कार्यरत है।

85 वीं ओली पारणा त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर विराजित पूज्य साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी, श्री राजिताश्रीजी एवं प्रवचनपुर साध्वी श्री नर्मिताश्रीजी आदि ठाणा-5 की अमृत निश्रा में पूज्य साध्वीवर्या श्री रजिता श्रीजी म.सा. को 85 वीं वर्धमान तप ओली आराधना की पूर्णाहुति 31 अगस्त को हुई। आपकी आयंबिल तपाराधना के अनुमोदनार्थ त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया था। श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन पढ़ाई गई। पारणा कराने का लाभ श्री बाबूलालजी बिजली वाला परिवार ने लिया था। गाजेबाजे से पूज्यश्री उनके निवास पर पधारे। यहां से पगलिया आदि कर पुनः उपाश्रय पधारे। यहां आपका पारणा सुखसाता पूर्वक हुआ। संघ में श्रृंखलाबद्ध आयंबिल चल रहे है। चार्तुमासिक धर्माराधना में विभिन्न तप और जप के साथ अनुष्ठान सम्पन्न हो रहे है।आपकी निश्रा में पर्वाराधना अच्छी रही। 24 सितंबर को रथयात्रा का आयोजन किया गया।

श्री वर्धमान शक्रस्तव का आयोजन हुआ

मीरपुर- प्राचीन तीर्थ मीरपुर सिरोही जिले में पूज्य मुनिश्री पुण्यरत्न विजयजी एवं मुनिश्री नयशेखर विजयजी म.सा. की निश्रा में यहां दिनांक 24 सितंबर को श्री वर्धमान शक्रस्तव का भव्य आयोजन किया गया।

प्रतिक्रमण पर भाव यात्रा आयोजन हुआ

पूना- गुड टेकड़ी जैन श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज के सुशिष्य पूज्य आचार्यदेव श्रीजैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचलमुक्तिसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में महापर्व के पूर्व प्रतिक्रम भाव यात्रा का आयोजन किया गया। दिनांक 10 सितंबर को आयोजित इस कार्यक्रम में प्रतिक्रमण क्या है ? क्यों करना है ? कैसे करना है ? छह आवश्यक का रहस्य क्या है। योग मुद्रा का रहस्य क्या है, इस बारे में जानकारी दी गई। **आपका आगामी चार्तुमास श्री अर्बुजगिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में होने की घोषणा की गई है।**

पूज्यश्री का 101 वां जन्म दिन मनाया

कुणासी- श्री मनमोहन पार्श्वनाथ धाम में पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय राजतिलक सूरीश्वरजी म.सा. का 101 वां जन्मदिन यहां बढ़े उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर परमात्मा का केशर से अभिषेक किया गया। जन्म महोत्सव का आयोजन दिनांक 25 सितंबर को किया गया।

रात्रि भोजन त्याग अभियान

थाने- मात्र जैन ही नहीं, अन्य धर्म (दर्शन) में भी रात्रिभोजन को निषेध माना गया है। थाने नगर के चारों सम्पदायों एवं अजैनों द्वारा भी रात्रि भोजन/कंदमूल त्याग एवं नवकारसी का पच्चक्खाण (नियम) लेने वाले पुण्यशालियों का राजेन्द्र ग्रुप, थाने द्वारा विशिष्ट बहुमान किया गया।

तीन हजार की जनमेदनी के बीच हीरा व्यापारी ने सजोड़े दीक्षा मुर्हूत ग्रहण किया

सूरत- धर्मनगरी सूरत के आंगण में पार्ले पाईन्ट, सरगम शॉपिंग सेन्टर के पास स्थित श्री उमरा जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में आजीवन गुरुगुण चरणोपासक, श्रमणी गणनायक जैनाचार्य श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में उत्सव का माहौल था। अहो गुरु श्रमण दीक्षा मुर्हूत ग्रहणोत्सव डेढ़ माह तक 9 चरणों में रहेगा जिसमें 23 मुमुक्षुओं दीक्षा मुर्हूत ग्रहण करेंगे। प्रथम चरण में सूरत के हीरा व्यापारी जुना डीसा के वतनी श्री दीपेशभाई प्रवीणभाई शाह और उनकी धर्मपत्नी पीकाबेन दीपेश शाह मुर्हूत ग्रहण किया। पूज्य गुरुदेवश्री रश्मिरत्न सूरीजी ने शंखनाद-घंटनाद की मंगल ध्वनि के बीच 28 जनवरी 2024 का दीक्षा मुर्हूत दिया और जाहेर किया कि यह दीक्षा सूरत-वेसू दीक्षादानेश्वरी संयम तीर्थ महाविदेहधाम में होगा। उस दिन होनेवाली समूह दीक्षा में दूसरे अनेक मुमुक्षुओं जुड़ेंगे। इस अवसर पर तीन हजार से ज्यादा जनमेदी उपस्थिति थी। **आगामी चार्तुमास की श्री अडाजण जैन संघ में जय बोली गई।**

राष्ट्रसंत श्री चन्द्राननसागरसूरीजी की निश्रा में श्री नाकोड़ा भैरव धाम में उपधान होगा

मुंबई- राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी महाराजा की महामांगलिक का आयोजन आपश्री के द्वारा संस्थापित तीर्थ श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम ठेकाले में दिनांक 16 सितबंर को भव्य आयोजन के साथ सम्पन्न हुई पूज्यश्री की निश्रा में यहां प्रत्येक रविवार को श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरव महाहवन-पूजन का आयोजन भी हो रहा है। पूज्यश्री की निश्रा में श्री पर्युषण महापर्व की आराधना 12 से 19 सितंबर तक आयोजित हुई। यहां उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम मुर्हूत दिनांक 29 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत दिनांक 31 अक्टूबर को है। तपस्वियों का वरघोड़ा 16 दिसंबर को निकलेगा तथा माल दिनांक 17 दिसंबर को होगी।दिनांक 22 सितंबर को श्री पद्मावती महापूजन का आयोजन किया गया।

मालवरत्ना अलंकरण किया

नआदा- यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित साध्वीवर्या श्री मुक्तिदर्शनाश्रीजी म.सा. को श्री संघ की ओर से मालवरत्ना अलंकरण से विभूषित किया गया। साध्वी श्री मल्लिदर्शना श्रीजी के अट्ठाई तपस्या एवं श्री संघ में हुई विघ्न तप अनुष्ठान के अनुमोदनार्थ दिनांक 26 सितंबर को भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया।

श्री वर्धमानकुमार का जन्मोत्सव मना

नागपुर-यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित साध्वीवर्या श्रीअक्षयज्योति श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 3 सितंबर श्री वर्धमान कुमार (श्री महावीरस्वामीजी) का जन्मोत्सव का विशेष आयोजन किया गया। जन्मदिवस की सभी क्रिया परम्परागत विधान के अनुसार संगीत के साथ हुई बाद में सधार्मिक वात्सल्य हुआ।

एक चौमासा ऐसा भी....

श्री विजयवाड़ा जैन संघ में चल रहा पूज्य गुणहंसविजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रारंभ होकर अभी तक एक रुपए का भी खर्चा नहीं, एक रुपए की भी बोली नहीं हुई है। जितनी भी बोलियां हुई है वो सभी आराधना की बोली हुई जिसने ज्यादा नियम लिए उसको चढ़ावा मिला। व्याख्यान दिन में 8 बार चलते हैं। मुख्य व्याख्यान सुबह 9.15 से आरंभ हो जाते है, 9.20 तक लगभग 1200 की संख्या हो जाती है। ठीक 9.20 को व्याख्यान हाल को ताला लगा देते है, कोई भी हो उसके बाद न कोई आ सकता है न कोई जा सकता है।

स्वयं अध्यक्ष एवं मंत्री भी अगर बाद में आए है तो पीछे ही बैठेंगे लोगों के बीच से आगे कोई नहीं आ सकता है। ऐसी व्यवस्था सम्पूर्ण देश में किसी भी चार्तुमास में पहली बार हो रही हैं।

संघ में कोई भोजन व्यवस्था नहीं है, गुरु भगवंत के मेहमान भी संघ के श्रावकों के घर में ठहराते हैं। गुरु भगवंत संघ का पानी भी नहीं वापरते है वो भी लोगों के घर से लाते हैं।

पूज्यश्री जो ज्ञान का खजाना है जिन्होंने कई-कई आचार्य भगवंतों को भी पढ़ाया है जिनकी दीक्षा को 35-30 वर्ष हो गये है जिनमें आचार्य भगवंत जितनी श्रेष्ठता गुणवत्ता हो वो पूज्यश्री सिर्फ मुनिराज है एक भी पद धारण नहीं किया है।

ऐसा लगता है जैसे चौथे आरे के गुरु भगवंत इस पंचम काल में आ गए हो।

धन्य धन्य जिनशासन।

बंधु त्रिपुटी श्री सिद्धाचल महातीर्थ में आत्मलक्ष्मी उपधान तप करवायेंगे

पालीताना- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की निश्रा में आत्मलक्ष्मी उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रथम प्रवेश का मुर्हूत दिनांक 30 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश दिनांक 1 नवंबर को होगा। उपधान तप के तपस्वियों की शोभायात्रा तथा रथयात्रा का आयोजन दिनांक 16 दिसंबर को होगा। उपधान तप की मोक्षमाला दिनांक 17 दिसंबर को होगी। प्रथम उपधानवाले को सोने की चैन, दूसरे उपधान तप वाले को सोने की गिल्ली, तीसरे उपधान तपवाले को विशिष्ट बहुमान होगा। उपधान तपस्वियों को कांसे की थाली तथा उपकरणों की कीट दी जायेगी।

पालीताना में जैनाचार्यश्री जिनोत्तमसूरीजी की निश्रा में उपधान-अंजन-प्रतिष्ठा संघ के आयोजन होंगे

पालीताना- पूज्य आचार्य श्री सुशीलसूरीजी कृपापात्र जैनाचार्य श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में इस वर्ष चार्तुमास आराधना के साथ उपधान-तप-अंजन प्रतिष्ठा-12 गांव का संघ अयोध्यापुरम् से पालीताना संघ आदि आयोजन होने जा रहे है। अन्य नगरों में प्रतिष्ठा होने के साथ चैत्र माह की नवपद ओली आराधना श्री नाकोड़ा महातीर्थ में होगी।

श्री भक्ति पार्श्वप्रभु के 108 अभिषेक हुए

मुंबई- चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य पंन्यास प्रवर श्री दिव्येशचन्द्र सागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री संघ स्थविरश्री के 85 वें संयम वर्ष की अनुमोदना में श्री भक्ति पार्श्वनाथ प्रभु के मेरु पर्वत पर 108 अभिषेक, 108 भव्य पीठिका के साथ किये गये। दीपक, प्रश्नपत्र, स्पर्द्धा के साथ रंगोली और भव्य दीपरोशनी की गई थी। यह आयोजन 3 सितंबर को हुआ।

श्री गिरनारजी की नव्वांणु यात्रा

जूनागढ़- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हेमवल्लभसूरीजी महाराज जिन्होंने अभी तक श्री गिरनार महातीर्थ की 3500 यात्रा कर ली है, ऐसे जैनाचार्यश्री की अमृत निश्रा में दिनांक 6 जनवरी 2024 से नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ होगा। यात्रा की पूर्णाहुति पर मालारोपण 28 फरवरी 2024 को होगा।

सहस्त्र महाभिषेक का आयोजन

पूना- पूना- हाईडपार्क टेम्पल श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित साध्वीवर्या पूज्य श्री सौम्यरत्ना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-4 की निश्रा में यहां दिनांक 10 सितंबर को जिन सहस्त्रा नाम स्तोत्र मंत्र गर्भित के द्वारा परमात्मा के महाभिषेक का आयोजन किया गया। टेनिस कोर्ट में आयोजित महाभिषेक में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने अभिषेक का लाभ लिया।

श्री वीर गौतम उपधान तप का आयोजन

विजयवाड़ा- श्री अरिहंतधाम गुंटुंवल्ली के श्री संभवनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में पूज्यपाद मुनिश्री श्री गुणहंसविजयजी महाराज आदि साधु-साध्वी ठाणा-10 की निश्रा में श्री वीर गौतम उपधान तपाराधना होने जा रही है। उपधान में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत दिनांक 1 सितंबर तथा दूसरा मुर्हूत दिनांक 3 दिसंबर को है। उपधान तप की मोक्ष माला दिनांक 19 जनवरी को होगी। उपधान तप आयोजक श्री सोलंकी परिवार है।

श्री गिरनार महातीर्थ का संघ निकलेगा

जेतपुर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जगतचंद्रसूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में जेतपुर से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। संघ का प्रस्थान कलकत्ता से 10 जनवरी 2024 को होकर पदयात्रा 13 जनवरी 2024 से जेतपुर से आरंभ होगी। गिरनार 16 जनवरी को संघ पहुंचने के बाद 17 जनवरी को संघ माल होगी।

श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य श्री विजयसंयमबोधि सूरीजी म.सा.आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। यह यात्रा दिनांक 15 अप्रेल 2024 सोमवार से आरंभ होगी। लाभार्थी हंसा बहन मुलाणी परिवार है।

पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया

गांधीनगर- तपागच्छय प्रवर समिति के कार्यवाहक पू. गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री अभयदेवसागर सूरीश्वरजी महाराज एवं आचार्य देवेश श्री मोक्षरत्नसागर सूरीजी महाराज - आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का चार्तुमास चल रहा है ।। आपश्री की अमृत निश्रा में नाण के लिये चार धातु की प्रतिमा श्री आदिनाथ श्री शांतिनाथ, श्री पार्श्वनाथ तथा श्री महावीर प्रभु की प्रतिमा का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुआ । दिनांक 3 से 9 सितंबर तक आयोजित महोत्सव में विविध देवी-देवता, नवग्रह आदि पूजन के साथ विनीता नगरी का उद्घाटन हुआ । च्यवन कल्याणक तथा तपस्वियों का वरघोड़ा निकला । जन्म कल्याणक विधान तथा परमात्मा का अभिषेक हुआ । जन्म की बधाई के बाद अंजन विधान की बोली हुई । दीक्षा कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया । मध्यरात्री में अंजन विधान के बाद प्रातः प्रतिमा के प्रथम दर्शन तथा निर्वाण कल्याणक के 108 अभिषेक हुए । सत्तरभेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई । श्रावक से श्रमण बनने की संयम साधना करानेवाली आराधना , उपधान का आयोजन प्रथम मुर्हूत दिनांक 25 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत दिनांक 27 अक्टूबर से होने जा रहा है । उपधान तप का मालारोपण का भव्य आयोजन दिनांक14 दिसंबर को होगा । अभय अमृत महोत्सव समिति के द्वारा आयोजित यह तपाराधना सेक्टर-22 गांधीनगर में होगी । उपधान के बाद आपश्री की निश्रा में राघनपुर से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन दिनांक 29 दिसंबर से होगा । संघ माल दिनांक 3 जनवरी 2024 को होगी ।

नाकोड़ा में उपधान तप के साथ नव्वांणु यात्रा का महायोजन

नाकोड़ा- पूज्य आचार्यदेवेश श्री नयचंद्रसागरसूरीजी महाराजा के शिष्यरत्न मुनिश्री सुमितचंद्रसागरजी और मुनिश्री शीतलचंद्रसागरजी महाराज आदि साधु साध्वी की निश्रा में यहां उपधान तप का भव्य आयोजन प्रथम मुर्हूत दिनांक 7 और 9 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत 14 एवं 16 दिसंबर के साथ आरंभ होने जा रहा है । उपधान तप के तपस्वीयों की भव्य शोभायात्रा तथा मालारोपण का आयोजन दिनांक 25 जनवरी 2024 को होगा । बच्चों के लिये 18 दिवसीय उपधान का आयोजन दिनांक 23 दिसंबर से होगा । नव्वांणु यात्रा नाकोड़ा तीर्थ में पीछे की ओर बने 500 सीढ़ियां ऊपर विराजित श्री नेमि, पार्श्व एवं श्री शांतिप्रभु की यात्रा के साथ कराई जायेगी ।

✻ *समस्त संसारी जीव कर्मवश साताअसाता के उदय का अनुभव करते ही रहते हैं; उसमें मुख्यतया तो असाता का ही उदय अनुभव में आता है ।*

कालधर्म

मुंबई- आचार्यदेव श्री नयचंद्र सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य सागर समुदाय के तपस्वी मुनिश्री अर चंद्र सागरजी म.सा.के 43 वें उपवास की आराधना चल रही थी, स्वास्थ्य ठीक न होने पर पारणा किया फिर चार दिन बाद पुनः तबीयत खराब होने पर हॉस्पिटल में वेंटिलेटर पर रखा पर 8 सितंबर को आपका कालधर्म सुबह 4.30 बजे हो गया । आप मोतीशाह जैन मंदिर भायकला में विराजमान थे ।

श्री क्षेत्रपाल धर्णेन्द्रदेव की प्रतिष्ठा हुई

राउलकेला- अंतरष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन में आचार्य देव श्री जिनोत्तमसागर सूरीजी महाराज के आर्शीवाद से राउलकेला के श्री पार्श्व पद्मावतीधाम में श्याम तथा श्वेत वर्णीय क्षेत्रपाल धर्णेन्द्रदेव की प्रतिमा प्रतिष्ठा का आयोजन दिनांक 21 सितंबर को किया गया इसके साथ ही यहां निर्मित पार्श्वनाथ भवन का उद्घाटन भी किया गया ।

दादा के दरबार से दादा के दरबार की संघ यात्रा

पालीताना- श्री सिद्धाचल महातीर्थ से श्री नेमीनाथ दादा के दरबार गिरनारजी का छःरिपालित संघ आयोजित होने जा रहा है । पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अजितयश सूरीजी एवं आचार्य भगवंत श्री संस्कारप्रशसूरी जी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 6 फरवरी 2024 को संघ का प्रयाण पालीताना से होकर दिनांक 22 फरवरी 2024 को श्री गिरनार महातीर्थ से संघ माल होगी ।

हमारे तीज-त्यौहार

1- आसोज वदी-6	बुधवार	04-10-2023	रोहिणी
2- आसोज वदी-14	शुक्रवार	13-10-2023	सागर सरताज गच्छाधिपति श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा का 103 वां जन्मदिन
3- आसोज सुदी-5	गुरुवार	19-10-2023	तपागच्छाधिपति श्री माणिभद्र दादा का यात्रा स्मृति दिन
4- आसोज सुदी-6	शुक्रवार	20-10-2023	शाश्वती नवपद ओलीजी आरम्भ
5- आसोज सुदी-15	शनिवार	28-10-2023	शरद पूर्णिमा, शाश्वत ओली की पूर्णाहुति, खंडग्रास चन्द्रग्रहण, पांच पांडव निर्वाण दिवस

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-**आसोज वदी-8, शनिवार, दिनांक 07-10-2023, समय-23.58 बजे से
समाप्तः- आसोज वदी-9, रविवार, दिनांक 08-10-2023, समय-09.45 बजे तक

पंचक :- **आरम्भः-**आसोज सुदी-10, मंगलवार, दिनांक 24-10-2023, समय-04.23 बजे से
समाप्तः- आसोज सुदी-15, शनिवार, दिनांक 28-10-2023, समय-07.32 बजे तक

युवा युवती शिविर 30 अक्टूबर तक चलेगा

मंदसौर- श्री रुपचांद आराधना भवन चौधरी कालोनी में 25 सितंबर से 30 अक्टूबर तक प्रतिदिन रात्रि 8.30 से 9.30 बजे युवा-युवती शिविर आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में 14 से 40 वर्ष की आयु के युवक-युवती रात्रि 8.30 से 9.30 बजे तक को शिविर में लिया गया है। 36 दिवसीय शिविर के बाद परीक्षा होगी। परीक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पानेवाले युवक-युवती को पुरस्कृत किया जायेगा।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

✲ दुःषमकाल का प्रबल राज्य चल रहा है, फिर भी अड्ग निश्चय से सत्पुरुष की आज्ञा में वृत्ति लगाकर जो पुरुष प्रकट वीर्य से सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की उपासना करना चाहते है, उन्हें परम शान्ति का मार्ग अब भी प्राप्त हो सकता है।

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

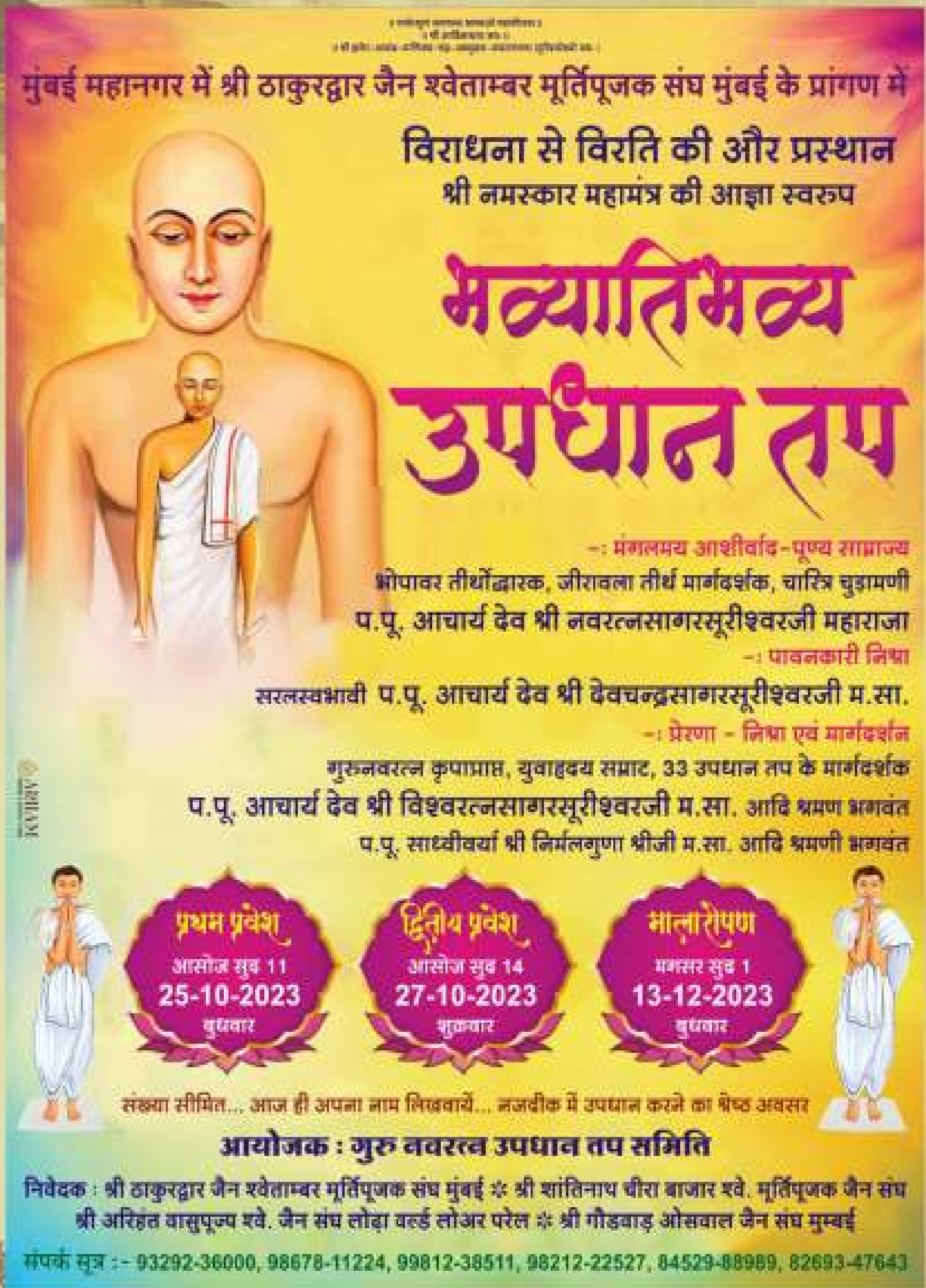

वर्ष 28 | भादवा-अश्विन | अक्टूबर-2023 | अंक 10 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

बुक पोस्ट

प्रति,

श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प
टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897